महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान का मुखपत्र
धर्मश्री
जनवरी - फरवरी - मार्च २००५
जरा रुको ! हम पुन: शिखरपर आरोहण करनेवाले हैं।
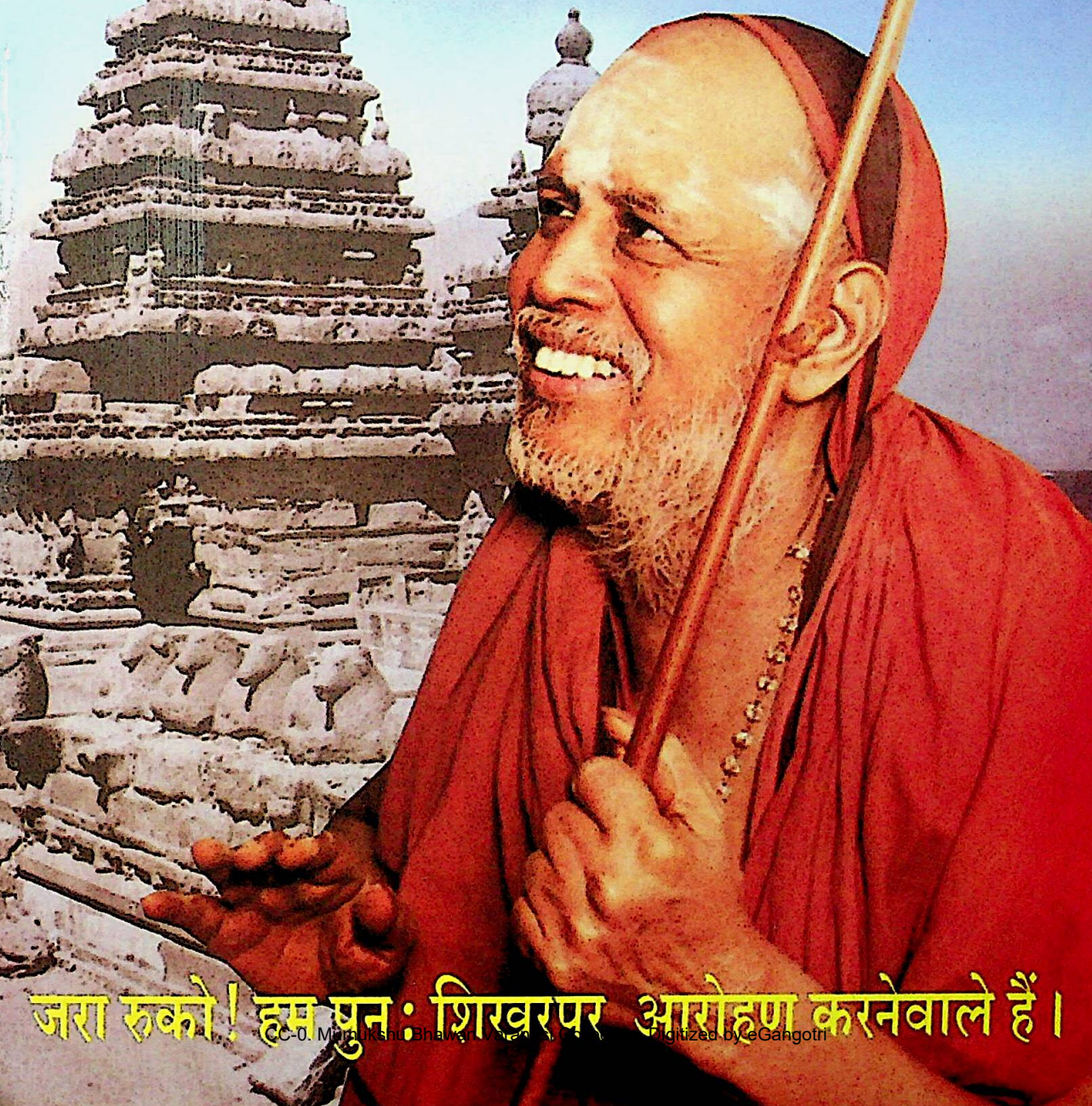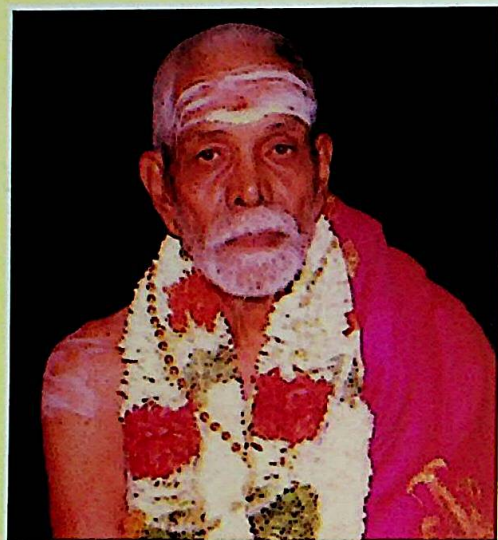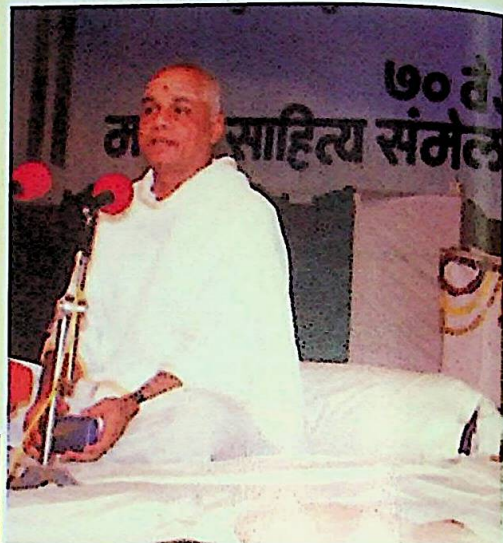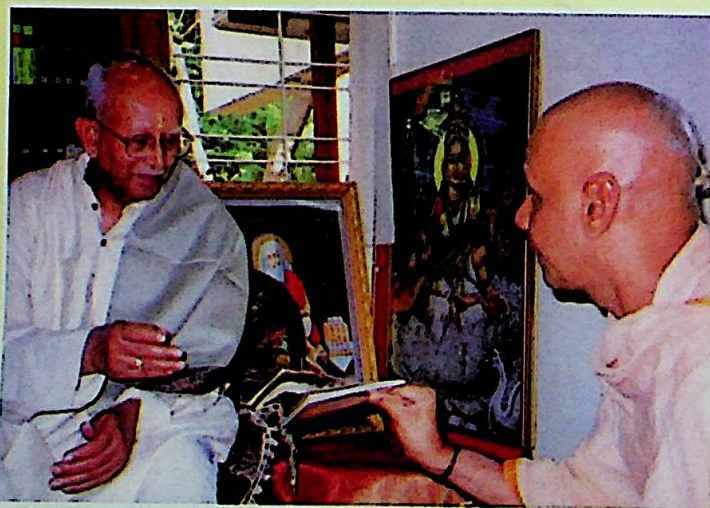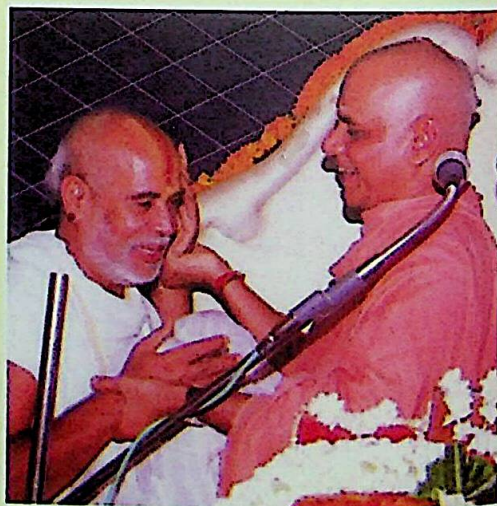
१. गुरुसेवा और वेदसेवा मे समर्पित स्व. श्रीनिवासन् जी को सप्रणाम श्रद्धांजलि ! २. मराठी साहित्य संमेलन मे साहित्य विषयक व्याख्यान
३. करवीर पीठ के पू.शंकराचार्य जी को 'धर्मश्री' मे स्वागत पूजन ४. पू. सरसंघचालक श्री.सुदर्शनजी से 'धर्मश्री' मे वार्तालाप
५. त्यागी संत श्री.मन्नारायण जी भक्तमाली (मामाजी) से स्नेह मिलन

।।धर्मश्री।।

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान का मुखपत्र

वर्ष ६ अंक १ पौष शु.२, सं. २०६१ शक १९२६ जनवरी/फरवरी/मार्च २००५

• अनुक्रमणिका •

✻ संपादक मंडल ✻

संपादक : डॉ. प्रकाश सोमण
कार्यकारी संपादक : श्री. भारवि खरे
मार्गदर्शक : डॉ. अशोक कामत, श्री. पुष्करलाल केडिया, डॉ. संजय मालपाणी, श्री. भागीरथ लड्ढा
सहयोगी : पं. महेश व्यास, श्री.मधुसूदन चंदुरकर (जोशी), डॉ. योगेन्द्र मिश्र
मुद्रक : मंदार ट्रेडर्स, ७५५, कसबा पेठ, पुणे ११.
दूरभाष : २४४५६१४२/२४४५८९४२

धर्मश्री के इस अंक के यजमान हैं
डॉ. श्यामजी अग्रवाल
स्नेहल ब्लोसम कॉम्प्लेक्स,
मालाड (प.) मुंबई
साभिनंदन धन्यवाद !

संपादकीय....

देशभक्तों को चुनौती

सपने में भी सोचा नहीं जा सकता था ऐसे भीषण संकट का पहाड ऐन दीपावली की रात्रि में भारतीय संस्कृतिके उपर टूट पडा। कांची कामकोटि पीठ के जगद्गुरु पू. शंकराचार्य जी महाराज को तथाकथित आरोप में बंदी बनाया जाना हमारे सांस्कृतिक इतिहास की सबसे भीषण दुर्घटना है। उनके बंदीवास के पश्चात् जाँच के नामपर तामिलनाडु सरकार की ओरसे जो कुछ किया गया वह केवल जाँच नहीं, इस धर्मपीठ का अधिग्रहण करने के लिये छेडा गया आतंकवाद सदृश अत्याचारी युद्ध है।

दंडकारण्य के राक्षस निरपराध ऋषि-मुनियों को मारकर उनकी हड्डियों के ढेर स्थान स्थानपर बना रखते थे ताकि, देखनेवालों के मनमें ऐसी दहशत निर्माण हो कि कोई विरोध करनेका साहसही नही जुंटा सके। ऐसा हम रामकथा में पढते हैं। यही भयग्रस्त अवस्था मैंने इस मास में तमिलनाडु के ८-१० दिनके प्रवास में अनुभव होती थी। दुष्ट शासक निरंकुश है, पुलिस का दमनचक्र चल रहा है, वंश भेद के प्रचार से बिखरी हुई जनता उदासीन है। और सामान्य धार्मिक लोग भयभीत हैं।

यह आक्रमण एक धर्माचार्य अथवा एक पीठपर नहीं है। विदेशी षड्यंत्र के अनुसार चली हुई यह कार्यवाही भारतीय संस्कृति एवं सनातन धर्म और पूरे देश की अखंडता को दी गई एक भयंकर चुनौती है। हिंदुओं की फूट और दुर्बलता का लाभ लेकर उन्हे आपस में लडाकर अधिक दुर्बल बनाने की विदेशियों की परंपरा रही हैं। इसीमें उनका लाभ है और इसीसे विदेशी धर्म-संप्रदाय यहाँ पनपते है। धर्मांतर केवल धर्मांतर नहीं होता, वह राष्ट्रांतर भी होता है। इससे राष्ट्रविरोधी विदेशी तत्वोंकी भी घुसपैठ यहाँ हो जाती है।

धर्म और राष्ट्रपर आये हुए इस भीषण संकट का सामना हर देशभक्त और धर्मप्रेमी को साहस तथा धैर्य के साथ करना चाहिए। दीपावली की रात्रि में कोटि कोटि दीप अमनके घने अंधकारमें भी प्रकाशमान रहते है। उन दीपों से प्रेरणा लेकर हम अपने अपने स्थान में अपने त्याग और तेजसे इस सांस्कृतिक अंधकारसे लडने का संकल्प लें और पूरी शक्ति के साथ धर्म रक्षा का कार्य करें।

अंतमें सुनामी में मृत लोगों की आत्मशांति हेतु प्रभु से प्रार्थना करता हुआ लाखों पीडित परिवारों को धैर्य एवं संबल प्राप्त हो इसी भावना के साथ। इस संकटकी बेला में हम सब एक रहेंगे और सभी चुनौतीयों का सामना करेंगे।

❀❀❀

कांची शंकराचार्य पर प्रहार

हिन्दू धर्म के मूल पर कुठाराघात

आचार्य किशोर व्यास

संपूर्ण भारतवर्ष के इतिहास में पहली बार एक ऐसा दुर्भाग्यपूर्ण अवसर आया है जिसके कारण भारत का सनातन हिन्दू धर्म अपने मूलाधार की रक्षा के प्रति चिंतित हो गया है। लगभग सभी धर्माचार्यों ने कांची कामकोटि पीठाधिपति पूज्य शंकराचार्य स्वामी जयेन्द्र सरस्वती जी को बंदी बनाए जाने की घटना, उसकी प्रक्रिया तथा जेल में उनके साथ किए गए अशोभनीय दुर्व्यवहार आदि की घोर निंदा की। इस प्रकरण से सारा देश हिल गया। स्वतंत्र भारत के इतिहास में पहली बार एक पूर्व राष्ट्रपति तथा दो पूर्व प्रधानमंत्री उपवास एवं धरने में सहभागी होने सड़क पर आए। पूज्य शंकराचार्य जी के साथ जो कुछ हुआ, हो रहा है, उसे सब जानते हैं। लेकिन यह क्यों हुआ, इसके मूल में जाने की भी आवश्यकता है।

प्रदीर्घ पवित्र परंपरा

भगवान आदि शंकराचार्य महाराज का अवतार लगभग २,५०० वर्ष पहले केरल के कालड़ी ग्राम में हुआ। इस संसार में सनातन वैदिक धर्म की पुनःस्थापना करने का सर्वाधिक श्रेय उन्हीं को जाता है। आदि शंकराचार्य महाराज हमारी राष्ट्रीय एकता के अत्यन्त श्रेष्ठ सम्पोषक और प्रतीक रूप में उभर कर आए। केवल ३२ वर्ष की आयु में सर्वत्र भ्रमण करके भारतवर्ष की चारों दिशाओं में अपने मठों की स्थापना की और सम्पूर्ण वैदिक भारतीय समाज को एकता के सूत्र में बांधा। वेदों के ज्ञान पर जो बादल छाए थे, उन्हें अपनी अकाट्य तर्क-शक्ति और मेधा से दूर किया। बद्रीनाथ आदि क्षेत्रों में विस्थापित देव मूर्तियों की पुनःस्थापना करके सनातन धर्म को इस प्रकार परिपुष्ट किया कि यह धारा अनवरत रूप से आगे चलती रहे। उन्होंने देश के चारों कोनों में चार आश्रम स्थापित किए और अपने चार प्रमुख शिष्यों को उनका दायित्व सौंपा। किन्तु शंकराचार्य जी महाराज स्वयं कांची में रहे। इसलिए आचार्य जी के द्वारा स्थापित चार शिष्य पीठ हैं, किन्तु कांची का पीठ स्वयं आचार्यजी का गुरुपीठ है। इसलिए उस पीठ का महत्व हमारी परंपरा में सबसे अधिक है।
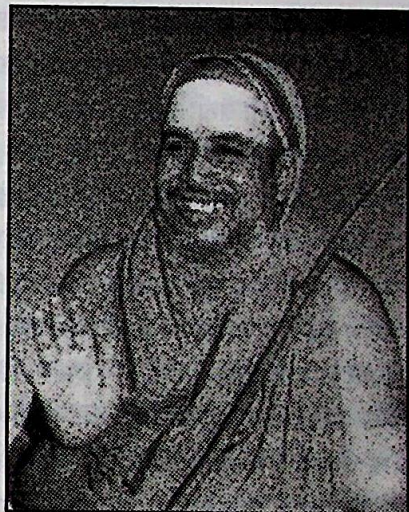
अन्ये तु गुरवः प्रोक्ताः जगद्गुरुरयं स्मृतः।

ऐसा स्वयं आदि शंकराचार्य जी ने कहा है। उस समय से कांची पीठ की परम्परा अनवरत रूप से चलती आयी और उस परंपरा में शंकराचार्य श्री चंद्रशेखरेंद्र सरस्वती जी महाराज, जिनको महास्वामी या परमाचार्य कहा जाता है, का अवतरण एक विलक्षण घटना थी। पूज्य परमाचार्य जी तपस्या के साकार विग्रह थे। उन्होंने स्वयं १३ वर्ष की

अल्प अवस्था में पीठ पर आरोहण किया। वे पीठ के ६८ वें शंकराचार्य रहे। १३ वर्ष की आयु में पीठ पर आसीन होने के बाद उन्होंने अपना अध्ययन, तप, देवताओं का आराधन और राष्ट्रीयता का पोषण- इन सबका इस प्रकार आचरण करके दिखायां कि वे स्वयं चलते-फिरते देवता के रूप में माने जाने लगे। पाल ब्रंटन से लेकर के अनेकानेक विदेशी लोगों ने, पत्रकारों व अत्यन्त श्रेष्ठ विद्वानों ने इस महात्मा के चरणों में बैठकर उनकी महत्ता का आकलन करने का प्रयास करके अपने जीवन को धन्य किया। पू. परमाचार्य जी महाराज का जीवन अत्यन्त तपोनिष्ठ और सादगीपूर्ण था। वे आजीवन स्वयं किसी भी वाहन में नहीं बैठे। विदेशी बहिष्कार के अंतर्गत १९१८ में विदेशी वस्त्रों को स्वयं जल में प्रवाहित करके उन्होंने आजीवन खादी का व्रत लिया। दलितों की बस्तियों में जाकर उनके सुख-दुःख को देखा, समझा। वे स्वयं निरंतर तपस्या में रत रहे। उनकी तपस्या के कारण पीठ का गौरव अत्यधिक बढ़ गया। पूज्य करपात्री जी महाराज ने एक बार कहा था कि 'भगवान आदि शंकराचार्य जी के पश्चात् परमाचार्यजी हीं ऐसे हैं जिनका तेज, तप और सारा जीवन आदि शंकराचार्य की याद दिलाता है।' पूज्य परमाचार्यजी ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में वर्तमान शंकराचार्य पूज्य श्री जयेन्द्र सरस्वती जी महाराज का चयन किया। १९ वर्ष की आयु में संन्यास ग्रहण करके पूज्य स्वामीजी महाराज ने पीठारोहण किया। इसी वर्ष उनके पीठारोहण के ५० वर्ष पूरे हुए हैं।

श्री रामकृष्ण-विवेकानंद के समान पूरक

पूज्य स्वामी जयेन्द्र सरस्वती जी महाराज और पूज्य परमाचार्यजी दोनों की भूमिकाओं में कुछ अंतर है। वह अंतर परस्पर पूरक है, परस्पर विरोधी नहीं। स्वामी रामकृष्ण परमहंस अत्यंत श्रेष्ठ संत रहे। साक्षात्कार संपन्न एक महान महात्मा के रूप में सारा संसार उनको जानता है। उनके शिष्य स्वामी विवेकानंद जी तपस्वी और उत्तम साधन सम्पन्न होने पर भी प्रवृत्ति से कुछ भिन्न थे। रामकृष्ण परमहंस देव भक्तिनिष्ठ तपस्यारत संत थे। किन्तु विवेकानन्द जी ने समाज को एक नई दिशा देना चाहा। उन्होंने भारतवर्ष में हिन्दू धर्म में एक नया विचार प्रस्तुत किया और वह विचार था - सेवा का विचार। वे स्वामी विवेकानंद ही थे जिन्होंने कहा था कि मेरे देश के युवकों को आने वाले कुछ वर्षों तक देवी-देवताओं की पूजा से स्वयं को दूर रखकर भारत माता की सेवा करनी चाहिए। और भारत माता की सेवा का अर्थ झुग्गी-झोपड़ियों में जाकर, वनवासियों में, गिरिजनों में जाकर शिक्षा का प्रचार करना, चिकित्सकीय सहायता देना, उन्हें जीवन की शैली सिखाना, उनके जीवन को ऊपर उठाना ही है। यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य एक चुनौती के रूप में देश के युवकों के सामने है। और इसीलिए पश्चिम में योग और वेदांत का उपदेश देने वाले स्वामी विवेकानंद ने भारतवासियों के लिए सेवा का उपदेश दिया।

जिस प्रकार का अंतर स्वामी रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानंद जी की प्रवृत्तियों में दिखता है और दोनों के मिलने से एक पूर्णता होती है, उसी प्रकार का अंतर पूज्य परमाचार्यजी महाराज और स्वामी जयेन्द्र सरस्वती जी महाराज में दिखता है। पूज्य जयेन्द्र सरस्वती जी महाराज को अंतःकरण में यह बात सालती थी कि हमारा देश अभी भी अनेक प्रकार से पिछड़ा हुआ है। इस देश की उन्नति के लिए जिस प्रकार अन्य लोगों को अपने कार्य करने चाहिए, उसी प्रकार पीठाधीशों को भी आगे आना चाहिए। धर्म के पीठ और मठ केवल पूजा-पाठ तक सीमित न रहें। वे शिक्षा, सेवा और समाज के उत्थान की अनेक प्रक्रियाओं में सहभागी बनकर उभरें। यह व्यावहारिक धर्म, यह क्रियाशील सेवामय धर्म उनको पुकार रहा था। इसीलिए उन्होंने १९८७ में सोचा कि पीठ पर विराजमान रहकर यदि यह काम नहीं किया जा सकता तो पीठ का ही त्याग कर दिया जाए। देश की सामान्य जनता की सेवा की यह ऊर्मि इतनी विलक्षण थी कि उन्होंने उसके लिए पीठ का त्याग भी करना चाहा। वे कुछ दिनों के लिए वहां से चले भी गए। किन्तु पूज्य परमाचार्य जी महाराज ने उन्हें बुलाकर कहा कि सेवा का यह कार्य आप पीठ पर विराजमान रहकर भी कर सकते हैं, और करना चाहिए भी। इसलिए पूज्य स्वामीजी महाराज ने पुनः अपने पद को स्वीकार किया और वे सेवा कार्यों में जुट गए।

आसेतु हिमाचल एकात्मता

इस धर्म की, इस संस्कृति, इस समाज की कितनी

सेवा उन्होंने की, यह आज यहां बताना चाहता हूँ। जब उनके द्वारा निर्मित संस्थाओं की सूची पर एक दृष्टि डालते हैं तो मन आश्चर्य से भर जाता है। दो-चार संस्थाओं का संचालन करना लोगों को कठिन लगने लगता है। पर आश्चर्य और आनंद की बात है कि भारत माता और भारतीय समाज की सेवा के लिए समर्पित इस पीठ के द्वारा सेवा के जो प्रकल्प चलाए जाते हैं, जो संस्थाएं चलाई जाती हैं, आज उनकी संख्या ४०३ है। संपूर्ण देश में घूम-घूमकर पूज्य स्वामीजी ने जन-जागरण किया। प्रारंभ में लम्बे समय तक तो वे पदयात्रा ही करते रहे। इधर कुछ वर्षों से, मुख्यतः सुरक्षा कारणों से, श्रद्धालुजन एवं सरकार की प्रार्थना पर उन्हें विभिन्न वाहनों का प्रयोग आरंभ करना पड़ा। देशभर में उन्होंने अब तक १० लाख कि.मी. अधिक पदयात्रा की है।

स्वामी जयेन्द्र सरस्वती महाराज आदि शंकराचार्य के पश्चात् पहले ऐसे शंकराचार्य हैं जिन्होंने स्वयं कैलास मानसरोवर की यात्रा की। उनसे पूर्व कोई भी शंकराचार्य वहां पर नहीं गए थे। उनकी नेपाल की यात्रा में मैं स्वयं उनके साथ था और मैंने देखा कि छोटे-छोटे गांवों में, वहां की बिल्कुल छोटी बस्तियों में जाने का उनका आग्रह रहता था। समाज के लोगों से मिलना, उन लोगों के भीतर श्रद्धा का संचार करना, अपना कोई आचार्य है, यह विश्वास उनको दिलाना और सामान्य जनता को श्रद्धा के सूत्र में बांधना ही उनका कार्य रहा है।

मुझे एक प्रसंग याद आता है। वे पैठण से मेरे जन्मग्राम बेलापुर में पधारनेवाले थे तो मैंने स्वामी जी से पूछा कि कुछ लोग आपकी पधरावनी करना चाहेंगे, उसकी व्यवस्था कैसे की जाए? तो उन्होंने मुझसे कहा, 'उपलब्ध समय कितना है, यह देखकर आप जैसी व्यवस्था करना चाहें वैसी कर लीजिए। लेकिन एक बात ध्यान में रखना, मुझे हरिजनों की बस्ती में भी लेकर जाना। मैं उनसे भी मिलना चाहता हूं।' जगद्गुरु के पद पर आसीन एक महात्मा का यह कहना कि मैं हरिजनों की बस्ती में जाकर उनके सुख-दुःखों में सहभागी होना चाहता हूं, उनके साथ प्रेम से बातचीत करना चाहता हूं, अद्भुत है। दरअसल यही तो हमारे धर्म की पीढ़ियों से नहीं, बल्कि सदियों से मांग रही थी।

दो वर्ष पहले पूज्य आचार्यजी ने मुझे सिक्किम में प्रवचन करने के लिए गंगतोक बुलाया था। वहां उन्होंने एक मंदिर बनाया था, जिसका उद्घाटन कार्यक्रम था, प्राण प्रतिष्ठा थी। मैंने स्वामी जी से पूछा कि इतनी दूर इस ठंड में आकर आपने इस मंदिर का उदघाटन करना किसलिए स्वीकार किया और यहां मंदिर किस लिए बनाया? पूज्य स्वामी जी ने कहा कि 'व्यास जी, सिक्किम के पास ही अपनी चीन की सीमा है। देश की प्रत्येक सीमा के निकट मंदिर होने चाहिए, ताकि हम अपने राष्ट्र की रक्षा करने में कुछ योगदान दे सकें।' कैसी है यह दृष्टि! कैसा है यह चिंतन! मैंने जब उनसे कहा कि मैं श्रीनगर में एक वेद पाठशाला स्थापित करना चाहता हूं तो उन्होंने कहा 'अभी नहीं, बाद में करेंगे। पहले जम्मू में कीजिए। अपने पग जम्मू में रखिए और नजर श्रीनगर के ऊपर रखिए।'

'सारा देश मेरा है। उसकी रक्षा करना मेरा कर्तव्य है।' यह भाव जब एक धर्माचार्य हमारे भीतर भरता है तो उसकी एक विशेष महत्ता होती है। पूज्य स्वामीजी महाराज एकमात्र ऐसे पीठाधीश शंकराचार्य हैं जो स्वयं पिछले वर्ष बंगलादेश की राजधानी ढाका गए, वहां जाकर एक मंदिर की सहायता की और वहां शंकराचार्य महाराज के नाम से एक अत्यन्त विशाल द्वार बनवाकर आए। उस मार्ग को स्वामीजी का नाम दिया गया है। एक वे ही ऐसे आचार्य हैं जिनको नेपाल और चीन सरकार स्वयं बुलाने के लिए उत्सुक रहती है। अपने निरंतर सेवा कार्यों से, सुलझी हुई दृष्टि से, लोगों से मिलते हुए और प्राचीन परंपराओं का पालन करते हुए उन्होंने जो कार्य किया है, उसकी हमारे सांस्कृतिक इतिहास में कोई उपमा नहीं, कोई उदाहरण नहीं।

सेवा कार्यों का नया कीर्तिमान

मेरे सामने उनके द्वारा चलाए गए कार्यों की सूची है। आप भी देखिए-

१. आदि शंकराचार्य, कामाक्षी देवी आदि कांची में अधिष्ठान मंदिर — १४

२. भारत के विभिन्न प्रदेशों में मठ,

१०१ मंदिरों की संख्या

३.	वेद रक्षा निधि, आदि न्यास	४८
४.	स्थापित एवं संचालित वेद पाठशालाएं	७०
५.	संस्कृत भाषा एवं शास्त्र विद्यालय	१४
६.	बड़े चिकित्सालय एवं चिकित्सा शिंक्षा संस्थान	१८
७.	छोटे चिकित्सा केन्द्र	३०
८.	समाजसेवा केन्द्र (अन्नक्षेत्र, अनाथालय आदि)	१०
९.	वृद्धाश्रम एवं विकलांग आश्रम	७
१०.	माध्यमिक विद्यालय (हाईस्कूल)	७३
११.	गोशाला	२
१२.	ग्रामीण विकास आदि सेवा केन्द्र	७
१३.	विदेशों में सेवा केन्द्र	५
१४.	श्री चंद्रशेखरेन्द्र सरस्वती विश्वविद्यालय	१

विज्ञान की दिशा में कार्यरत भारतीय युवकों को भारत से बाहर जाने का मोह न हो, प्रतिभा का भारत से पलायन न हो, वह रुक जाए इसलिए सूचना प्रोद्यौगिकी (इन्फार्मेशन टेक्नालाजी) के कितने ही केन्द्र उन्होंने स्थापित किए।

इस प्रकार ४०० से अधिक संस्थाओं से पूरे देश में और विशेष रूप से तामिलनाडू में लोक कल्याणकारी कार्यों की श्रृंखला निर्माण करते समय पू. महाराजश्री ने वेदविद्या, बाल संस्कार, वनवासी सेवा, विपन्न सेवा, कृषि, पशु-संवर्धन, चित्रकला, संगीत इत्यादि कला, स्वास्थ्य एवं शिक्षा संस्थान जैसे सेवा कार्यों को आरंभ किया। उनके अधिकांश शिक्षा संस्थानों में सूचना प्रोद्यौगिकी को विशेष महत्त्व दिया गया। पू. स्वामीजी के द्वारा निर्मित विश्वविद्यालय सेवा संस्थाओं का मुकुटमणि है।

अपने स्वयं के जीवन को अत्यन्त सादगीपूर्ण रखते हुए दिन में केवल एक बार अन्नग्रहण करना और एक ही वस्त्र पूरे शरीर को ढंकने के लिए प्रयोग करनां। ऐसा सादा जीवन जीते हुए एक त्यागी सत्पुरुष ऐसी संस्थाओं का निर्माण कर उनका संचालन करता है, यह अपने आप में हम सबके लिए एक अत्यन्त आदर एवं श्रद्धा का विषय बन ही जाता है। लेकिन वही हमारे देश में काम करने वाले ईसाई मिशनरियों के लिए द्वेष का विषय बन गया।

कुटिल षड्यंत्र

दक्षिण भारत में एक दीपस्तंभ के रूप में खड़ा हुआ कांची पीठ इन सारी सेवाओं का संचालन करता रहा, जिसके कारण जिन ईसाई मिशनरियों को लगता था कि सेवा पर उनका एकाधिकार है, उनको धक्का लगा। उनके मतान्तरण के वेग में कम आई और उसके साथ-साथ और भी एक कार्य में स्वामी जी का योगदान रहा। तमिलनाडू में मतान्तरण विरोधी कानून पारित हुआ,उसके कारण भी ईसाई मिशनरियों को धक्का लगा। दुर्भाग्य की बात यह है कि हमारे देश में, विशेषकर तमिलनाडू में शायद बहुत बडा अधिकारी वर्ग अमरीकी ईसाई मिशनरियों के चंगुल में फंसा हुआ है। इतना धन उसके लिए व्यय किया जाता है कि लगभग कोई भी

'धर्मश्री' के सभी पाठकों हेतु विशेष अनुरोध

'धर्मश्री' के पाठकों की संपर्क सूची पिछले कई दिनों से अद्यावत् करने का प्रयास शुरु है। इससे पहले भी पाठकों से प्रार्थना की गई थी कि इस अंक की प्राप्ति के विषय में कुछ सुझाव हों (जैसे पते में परिवर्तन, अंक प्राप्त न होना, एक से अधिक अंक प्राप्त होना आदि) तो कृपया सूचित करें। (इस आवाहन के अनुसार जिन्होंने इसके बारे में पत्र लिखे हैं उसके लिये कार्यवाही की गई है) फिर भी हम ऐसादेख रहे हैं कि नये पते के अभाव में, पूरा पता न होने से, पिन कोड क्रमांक न होने से अनेक धर्मश्री अंक वापस लौट रहे हैं। इस आवाहन के माध्यम से यही प्रयास एक बार किया जा रहा है। पता अधूरा होना अंक की अप्राप्ति का प्रमुख कारण है, अत: संपूर्ण पता (विशेष कर पिन कोड क्रमांक) अवश्य लिखे। अगर एकही परिवारमें अपने नाम, फर्म के नाम आदि से अनेक अंक प्राप्त हो रहे हैं। तो कृपया पोस्टकार्डद्वारा हमें तुरंत अवगत कराएँ। अपनी क्रम संख्या (आपके पते के ऊपर लिखी गयी) अवश्य लिखिए।

अधिकारी ईसाइयत के अतिरिक्त चलने वाले अन्य मतपंथ के कार्य के साथ सहानुभूति रख ही नहीं सकता। यह केवल आज की बात नहीं है। तमिलनाडू में आज भी कोडनूर जेल में स्वामी प्रेमानंद नाम के एक संन्यासी बिना किसी अपराध के १० वर्ष से बंद है। सुनवाई करे कौन? हमारी यंत्रणा जब ईसाइयों के द्वारा खरीद ली गई है और अमरीकी डालर जिसमें काम करता है, ऐसे भ्रष्ट शासन से और उसकी नौकरशाही से किसी प्रकार के न्याय की आशा नहीं रखी जा सकती।

पिछले काफी समय से यह अंतरराष्ट्रीय षड्यंत्र किसी भी प्रकार पूज्य स्वामीजी को फंसाने के लिए कार्यरत था। मुझे एक बात ध्यान आती है, क्योंकि में इनकी योजना के तरीकों को जानता हूं। 'लांग टर्न प्लानिंग' और 'शार्ट टर्म प्लानिंग' करके किस प्रकार, किसे-किसे, कहां-कहां फंसाया जा सकता है और उसके लिए किस प्रकार विभिन्न पदाधिकारियों को अपने हाथ में रखा जाना चाहिए, इन बातों में माहिर ये मिशनरी किसी प्रकार इस महान व्यक्तित्व को अपने जाल में फंसाना चाहते थे। क्या हुआ होगा? मेरा अनुमान है कि वहां जो शंकररमन की हत्या की गई, वह हत्या ही वास्तव में इस बात का लाभ देखकर की गई होगी कि शंकररमन और स्वामी जी में विवाद है। उसने कुछ पत्र स्वामी जी को लिखे, इसलिए इसे समाप्त करके इसका सारा का सारा दोष इस पीठ पर डाला जा सकता है। इस प्रकार की योजना बनाकर धर्म के विरोध में खड़े हुए और भगवान श्रीराम के पुतले जलाने की जिनकी परंपरा रही, ऐसे धर्मविरोधी द्रमुक के लोगों के बलवान बनते ही, उनके शासन में आते ही और उनको कम्युनिष्टों का सहयोग मिलते ही, इस षड्यंत्र को कार्यान्वित किया गया। आज केन्द्र में कम्युनिस्टों का समर्थन लिए बिना शासन चल ही नहीं सकता। एक ओर मिशनरियों का षड्यंत्र, दूसरी ओर भगवान श्रीराम के पुतले जलाने की परम्परावाला द्रमुक का धर्मविरोधी गुट। एक और महत्त्वपूर्ण बात, हमारे देश का नियंत्रण भी इस समय काफी हद तक विदेशियों के हाथ में है। प्रधानमंत्री कोई भी हो, लेकिन इन सबके लिए सत्ता पर अंकुश रखने वाले लोग विदेशी हैं। इन सबका साझा षड्यंत्र सध गया और यह सोचा गया कि शंकररमन को समाप्त करके उसका दोष इस पीठ के मत्थे मढ़ा जा सकता है और उसमें स्वामीजी को फंसाया जा सकता है। पोप और चर्च को प्रसन्न करने के लिए इससे बढ़िया क्या उपहार हो सकता था?

स्वयं ही हत्या करवाना और स्वयं ही हत्या करते समय उससे पहले अथवा बाद में स्वामीजी के सचल दूरभाष पर फोन करना। उसका रिकार्ड तो हो गया। बोला क्या गया, वह कौन जानता है। मेरे सचल दूरभाष पर किसी का फोन आ गया तो रिकार्ड तो हो गया न। अपनी ही ओर से अपराधियों को नियुक्त करके इस प्रकार का षड्यंत्र रचकर स्वामी जी को फंसाया गया। उसका एकमात्र कारण है कि तमिलनाडू में पूज्य स्वामी जी महाराज मतान्तरण में एक अड़चन लगते हैं। चाहे कम्युनिस्ट हों, चाहे द्रमुक के लोग, चाहे ईसाई मिशनरियां हों- इन सबकी धर्मविरोधी और राष्ट्रविरोधी कार्रवाइयों के लिए दक्षिण भारत में यदि सबसे बड़ा कोई अवरोध है तो वह है कांची पीठ। इसी को बदनाम कर दिया जाए तो हिन्दू धर्म के मूल पर ही कुठाराघात करने का एक बहुत बड़ा मौका मिल जाता है, ऐसा सोचकर यह षड्यंत्र रचा गया।

वेटिकन के पोप जब तीन वर्ष पूर्व भारत आए थे तो उन्होंने खुलेआम कहा था कि पहली सहस्राब्दि में हमने यूरोप को ईसाई बनाया, दूसरी सहस्राब्दि में अफ्रीका को ईसाई बनाया। अब तीसरी सहस्राब्दि में एशिया को ईसाई बनाना है। बात साफ है कि एशिया में भारत सबसे बड़ा देश है। भारत में सर्वाधिक जनता हिन्दू और हिन्दुओं का सर्वोच्च पीठ कांची पीठ है। तो अगर इस मूल पर प्रहार करने का सुनहरा अवसर मिल जाए तो इससे बढ़िया क्या हो सकता था? और ऐसा अवसर पैदा करने के लिए अपने हस्तकों के माध्यम से पूरे तंत्र को भी विशाल धनराशि से खरीदना चर्च के लिए महंगा सौदा नहीं था।

मुझे एक हृदयस्पर्शी प्रसंग याद आता है। १९८४ में श्रीस्वामीजी महाराज का चातुर्मास पैठण (जि. औरंगाबाद) में था। वे उस निमित्त तीन माह वहां रहे। उनकी और पैठण के सभी भक्तों की इच्छा थी कि इस अवसर पर आदि

शंकराचार्य जी की प्रतिमा की स्थापना संत एकनाथ समाधि मंदिर में की जाए। किन्तु वहां एक डाक्टर ने इसका विरोध किया। पूरा गांव स्थापना के अनुकूल था। केवल एक व्यक्ति का विरोध था। एक भी व्यक्ति का विरोध न हो, यह स्वामी जी की इच्छा थी। अत: लोगों के चाहने पर भी स्थापना नहीं हो पाई। पू. स्वामीजी की विदाई के विशाल जुलूस में उन डाक्टर महोदय ने स्वामीजी से प्रणाम करके कहा- महाराज, मैंने आपको बहुत कष्ट दिया। कृपया आप मुझे शाप मत देना। महाराजश्री हंसकर बोले, 'डाक्टर, मुझे कुछ कष्ट नहीं हुआ। शाप की बात ही गलत है। आप इस शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर देंगे तो भी हर टुकड़ा आपको आशीर्वाद ही देगा। ये काषाय वस्त्र किसी को शाप देने के लिए नहीं धारण किया है, सबमें नारायण देखने के लिए किया है।' इस क्षमा और करूणा का परिणाम यह हुआ कि उन्हीं डाक्टर ने अगुवाई करके फिर से स्वामी जी को पैठण निमंत्रित किया और शंकराचार्य जी की मूर्ति स्थापना की। प्रेम से इस प्रकार सभी को जीतने वाला महात्मा किसी की हत्या करवा सकता है, यह कल्पना भी नहीं की जा सकती।

हिन्दू संस्कृति पर संकट

घटनाएं आपके समाने हैं। एक सामान्य अपराधी को भी जो न्याय मिलता है, उस न्याय से भी स्वामी जी को इस समय वंचित रखा गया है। दूसरे किसी भी मत-पंथ का नेता यदि इस प्रकार के आरोपों से लांछित भी होता तो उसके साथ इस प्रकार का व्यवहार करने का साहस देश के किसी प्रदेश की सरकार नहीं कर सकती थी। ठीक दीपावली के अवसर पर, जब सब लोग अपने त्योहार में व्यस्त थे और तीन-चार दिन लगातार अवकाश था उन्हें गिरफ्तार करने की वास्तव में क्या आवश्यकता थी? कहां जा रहे थे स्वामी जी? उसके पश्चात् भी न्यायालय में उनकी जमाज़त का विचार क्यों नहीं किया गया? बिना किसी प्रकार का आरोप-पत्र दाखिल किए इतने प्रतिष्ठित संत को यदि जेल में इस प्रकार से ठूंसा जा सकता है तो तय है कि हमारे देश के सारे धर्माचार्य संकट में हैं।

हिन्दू समाज के धर्मस्थानों को येन केन प्रकारेण सरकार के कब्जे में लाने का भीषण षड्यंत्र अधिकाधिक व्यापक होता जा रहा है। कुछ वर्ष पहले बंगाल की कम्युनिस्ट सरकार ने रामकृष्ण मिशन के लगभग २०० विद्यालय हड़पने का प्रयास किया। तिरुपति और मुम्बई के सिद्धि विनायक जैसे देवस्थान तो सरकारी अंकुश के नीचे हैं- अन्य देवस्थानों की संपत्ति पर भी सरकार की बुरी नजर है। स्वामीजी की गिरफ्तारी के दो दिन पूर्व ही माकपा की पालित ब्यूरो के सदस्य डी. राजा ने मंदिरों को मिलने वाले धन पर कर लगाने की मांग की थी। यह मनोवृत्ति क्रमश: हिन्दू देवालयों एवं मठ, आश्रम तथा संस्थानों को सरकार के गुलाम बनाने की ओर ले जाएगी।

परम पावन दलाई लामा को चीन ने जिस प्रकार शस्त्रों के बल पर अपने देश से खदेड़ दिया और समाप्त करने का प्रयास किया, हमारे देश के धर्माचार्यों की उस प्रकार की अवस्था करने की यह साजिश है। दलाई लामा कम से कम भारत में तो शरण ले सके। इस देश के धर्माचार्य कहां जाकर शरण लेंगे? हमारी इस प्राचीन संस्कृति, परम्परा को उसके मूल पर कुठाराघात करके नष्ट करने की साजिश को समझना होगा। हम इस स्थिति का तीव्र विरोध करने के लिए कटिबद्ध हों। यदि इसी प्रकार धर्माचार्यों का मानभंग करने का और हिन्दू समाज को अपमानित करने का दुश्चक्र चलता रहा, तो धीरे-धीरे सारी राष्ट्रीयता व धार्मिकता का क्षरण होकर १०० वर्षों के पश्चात् कदाचित् इस देश में कोई रामकथा नहीं सुनेगा।

मैं स्वयं तिब्बत की अवस्था देख आया हूँ। पिछले वर्ष मैं कैलास मानसरोवर की यात्रा पर इसलिए गया था कि मुझे तिब्बत देखने का अवसर मिले। मैंने वहां के छह में से शेष बचे दो मठों के प्रमुखों के साथ चुपचाप थोड़ी बातचीत की। उन्होंने कहा, 'महाराज २०० से अधिक मठ थे यहां, पर वे सारे के सारे नष्ट कर दिए गए हैं। भिक्षुओं को काट डाला गया, रौंदा गया। नमूने को ये छह मठ रखे गए हैं और इन मठों के हर कमरे में भी वीडियो कैमरा लगाया गया है। हम किसी के साथ किसी प्रकार बातचीत भी नहीं कर सकते। पता नहीं क्या-क्या रिकार्ड होता है। आपको लगता है कि हम अपने धर्म का पालन कर रहे हैं, लेकिन हम गुलाम बनकर जी रहे हैं। तिब्बत के उन बौद्ध मठों की अवस्था को

देखकर मेरा मन खिन्न हो गया। लेकिन अब लगता है कि यदि हमने इस प्रकार के षड्यंत्र में सावधानी नहीं बरती और इसका योजनापूर्वक विरोध नहीं किया तो धीरे-धीरे इस देश के सभी मठाधीशों को दलाई लामा से भी बुरी अवस्था में लाकर रख दिया जाएगा।

छत्रपति शिवाजी ही आदर्श

हमारा क्या कर्तव्य है? इस प्रकार का प्रश्न जब सामने आता है तो हमें छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। सर्वत्र अंधकार फैल गया था उस समय। अपूर्व धैर्य के साथ शिवाजी महाराज खड़े हुए और व्यक्तिगत आकांक्षाओं को तिलाञ्जलि देकर उन्होंने हिन्दुओं में एकता करने का प्रयास किया। बहुत लोग उनके साथ उस समय भी नहीं थे, लेकिन मुट्ठीभर लोगों के साथ मिलकर धैर्य और बुद्धिमानी से उन्होंने ही प्रतिकार आरंभ किया। यह प्रतिकार वे न करें इसलिए छत्रपति शिवाजी महाराज के पिताजी को भी जेल में रखा गया। छत्रपति शिवाजी महाराज के पिताजी भी जेल में इसलिए रखे गए थे कि हिन्दुत्व के इस बढ़ते रथ को रोका जाए। पूज्य स्वामी जी आज जेल में है। हमें सावधान रहकर ऐसी घटनाओं का हर प्रकार से, हर स्तर पर विरोध करना चाहिए। इसका रोष अंतःकरण में आग के समान धारण करना चाहिए। इस घटना का अर्थ केवल एक व्यक्ति को जेल भेजना नहीं है बल्कि यह सारे हिन्दू समाज को अपमानित करने की साजिश है। इस स्थिति में ऐसे अपमान को सहना एक मृतक का-सा जीवन जीना है। भगवान की आराधना, भारत माता की सेवा, यह सब कुछ हमारे धर्म-कर्म पर टिका है। और हमारे धर्म-कर्म का मूल केन्द्र कांची पीठ है। और इसलिए आसेतु हिमाचल सारे हिन्दू समाज को जागृत होकर, मैं किस राजनीतिक पार्टी का सदस्य हूं, इसका विचार न करते हुए, यह मेरे धर्म के ऊपर आक्रमण है, इस बात को ध्यान में रखकर अपना योगदान देने के लिए सिद्ध होना चाहिए।

इस धर्मपीठ का और धर्मपीठ के माध्यम से हमारे धर्म का ऐसा अपमान पहले कभी नहीं हुआ है। कानून के अंतर्गत रहकर शांतिपूर्ण उपायों से किन्तु एकजुट होकर और न थमते हुए आसेतु हिमाचल एक आंदोलन-अभियान जागृत करने की आवश्यकता है कि हमारे पूज्यपाद आचार्यजी को मुक्त किया जाए। लेकिन केवल इतना ही नहीं, इस प्रकार का बल और प्रभाव दिखाने की आवश्यकता है कि दोबारा ऐसा साहस करने का विचार भी कोई न कर सके। हम लोगों के अंतःकरण में यह आग निरंतर जलनी चाहिए। हम लोग जल्दी भूलते हैं। अपने-अपने घरों में बैठकर आनंद मनाते समय हम उस महात्मा को नहीं भूले जिसका अपराध यही था कि उसने इस समाज की, इस राष्ट्र की, इस धर्म की सेवा में कोई कसर नहीं छोड़ी। निःस्वार्थ भाव से किया हुआ यह त्याग, यह सेवा कार्य, उसके कारण बढ़ती हुई लोकप्रियता ही उनको शिकंजे में फंसाने का एक कारण बन गई। औरंगजेब ने चैत्र शुद्ध प्रतिपदा के पूर्व दिन फाल्गुन की अमावस्या को छत्रपति संभाजी महाराज का वध किया। यह इसलिए किया क्योंकि दूसरे दिन हिन्दुओं का त्योहार था। उसी प्रकार एक धर्माचार्य को दीपावली के एक दिन पूर्व गिरफ्तार किया गया। यह साहस केवल इसलिए हुआ कि हिन्दू समाज अपनी शक्ति का प्रदर्शन नहीं करता है।

केवल शक्ति होना ही पर्याप्त नहीं होता, वह दिखनी भी चाहिए। और उसके लिए जो त्याग और संघर्ष करना पड़ेगा उसे करने की सिद्धता भी चाहिए। सारे भारतवर्ष में जहां-जहां पर जो-जो उपक्रम कांची पीठ के सम्मान की पुनःस्थापना के लिए किया जा रहा है, उन सभी में सहभागी होकर सभी को अपने-अपने स्थान पर रहते हुए इस कर्तव्य को पूर्ण करना चाहिए। नहीं तो विदेशी शक्तियां अपने देश को छिन्न-विछिन्न कर देंगी। आज हमारे ऊपर पैसे और कुटिलता के बूते आक्रमण हो रहे हैं। हम इस कुटिलता को समझें और अंतःकरण में संकल्प करें कि इस कार्य के लिए तब तक संघर्षरत रहेंगे जब तक कांची पीठ और हिन्दू धर्म की प्रतिष्ठा पुनः स्थापित नहीं होती। हमारे अंतःकरण में यह संकल्प होना चाहिए कि हम अब रूकेंगे नहीं। भारत माता आज सभी को पुकार रही है। हम सब अपने-अपने स्थानों पर अपना कर्तव्य निभाएं, यही आज समय की मांग है। परमात्मा से प्रार्थना है कि हमारा पौरुष जागृत हो और संगठित शक्ति के रूप में हम अपने अभियान में अवश्य विजयी हों।

कांची कामकोटि पीठ : सत्य क्या है?

-सिद्धार्थबन्धु
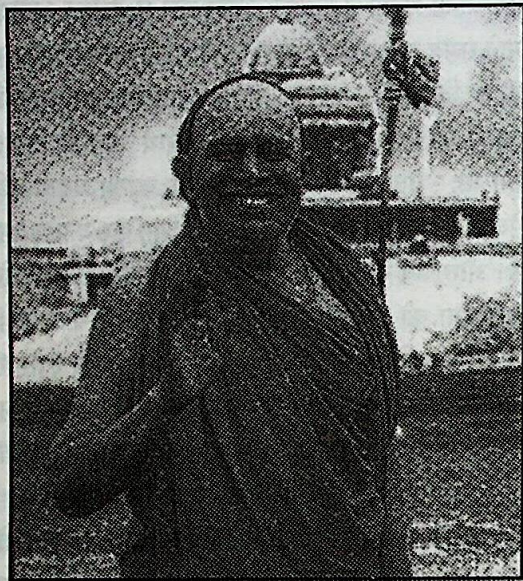
आज कांची कामकोटि मठ पुनः शासन और हिन्दुत्व विरोधी शक्तियों का कोप-भाजन बना है; किन्तु कांची कामकोटि पीठ इस अग्नि परीक्षा से पहली बार नही गुजर रहा है। आदि शंकराचार्य जब से कांची पधारे अर्थात ४९२ ई.पू. से ही उन्हें यहाँ के पण्डितों से शास्त्रार्थ करना पडा था। उन्हीं पण्डितों के बीच एक सप्तवर्षीय बालक सर्वज्ञ भी था, जिसने मण्डन मिश्र जैसे मीमांसकों को शास्त्रार्थ में पराजित करनेवाले शंकराचार्य को भी तीन दिन तक शास्त्रार्थ करके उन्हें कांची के सर्वज्ञ पीठ पर आरोहण करने से रोके रखा और उसे पराजित करके, संन्यास की दीक्षा देकर ही शंकर सर्वज्ञ पीठ पर आरोहण कर सके। तभी से कांची मठ को 'मूलाम्नाय' कहा जाता है और यथा संभव बालक ब्रह्मचारी को संन्यास दीक्षा देकर व्याख्यान पीठाधिपति, बनाने की परंपरा यहाँ है।

तब से ६६ पीठाधिपति अर्थात् जयेन्द्र सरस्वती तक पीठाधिपतियों की अविच्छिन्न परंपरा है। इनके गुरु (अब ब्रह्मलीन) श्री चन्द्रशेखरेंन्द्र सरस्वती परमाचार्य के नामसे विश्वप्रसिद्ध है। विश्व के हजारों अध्यात्म-वेत्ता स्वधर्म का उपदेश पाने के लिए उनका मुख देखते रहते थे। उन्होंने हजारों वेदपाठी बालकों की परीक्षा-निरीक्षा करने के उपरान्त देवी कामाक्षी के आदेशानुसार संन्यास की दीक्षा देकर जयेन्द्र सरस्वती को अपना उत्तराधिकारी चुना था और १९५४ से अपने निर्वाण तक अपने निर्देशन में प्रशिक्षित किया था।

परमाचार्य मूलतः कर्नाटक परिवार के थे; किन्तु उन्होंने अपना उत्तराधिकारी तमिल परिवार से चुना, इस दृष्टि से तमिलनाडु के सामान्यजन में इनके प्रति नैसर्गिक लगाव था। वैसे यह कोई परंपरा नहीं है। मठ के १७वें शंकराचार्य कश्मीर से, २२वें रत्नागिरि (महाराष्ट्र) और २८वें मिथिला के थे; पर व्यावहारिक पक्ष भी है कि तमिलनाडु की जनता ने जयेन्द्र स्वामी को पलकों पर बिठा लिया था। वह उनके कथन को पद-वाक्य-प्रमाण मानती है।

कांची मठ आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न मठ नही था। विद्याधन तृतीय के युग से ही मुसलमानों के आक्रमंण का यह शिकार होता रहा है। फलस्वरूप मठ, परंपरा की रक्षा के लिए डोलता फिरा। स्थिति यहाँ तक हो गयी थी कि कांची छोडकर कुम्भकोणम् में पीठाधिपति को निवास करना पडा और विष्णुकांची में एक टूटे हुए मकान को छोडकर कुछ नही बचा था। आज भी मठ के नाम पर मन्दिरों की जगह जमीन की मालियत लगाकर देवताओं के वस्त्राभूषणों के दाम तथा मठ द्वारा संचालित सैकडों देवार्थ तथा सेवार्थ न्यासों की सम्पत्ति को जोडकर मठ को अरबों-खरबों का धनी घोषित किया जा रहा है, जबकि सत्य यह है कि दिल्ली, कलकत्ता, गोवा, पाण्डिचेरी आदि स्थानों पर चर्चों की जो सम्पत्ति है, उसका हजारवाँ भाग भी कांची या किसी मठ के पास नहीं है। इनके सामने तिरुपति बालाजी, नाथद्वारा,

कालीघाट भुनगे के समान हैं।

परंतु पाकिस्तान के निर्माण के पश्चात् जैसे-जैसे अरब देशों से तथा अराजकीय संस्थानों के द्वारा धर्म, धर्मस्थान, शिक्षा, स्वास्थ्य, गरीबी-उन्मूलन के नाम पर धन और धर्मप्रचारक आने लगे, वैसे-वैसे हिन्दू-संस्थाओं की प्रतिरोधक शक्ति को समाप्त करने के लिए योजनाएँ प्रारम्भ हुई। सीरियन ईसाई और बोहरा मुसलमानों के अतिरिक्त लगभग सभी मजहबी सम्प्रदायों में नख-दन्त-विहीन हिन्दू समाज को नोच-नोच कर खाना प्रारम्भ किया है। फ्रेंच गवर्नर डुप्ले ने १८४८ इ. मे वेदपुरीश्वर मन्दिर (पाण्डिचेरी) तोडा था। आज दक्षिण भारत में भी कोई पहाडी नहीं बची है, जिस पर क्रॉस लगाकर अधिकार न किया जा रहा हो। कोई पुल या रेल्वे जंक्शन नहीं है, जहाँ मजार न हो। भारत सरकार ने शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में विशेष सुविधाएँ देकर इस आग में प्रभूत मात्रा में घी डालने का काम किया है।

श्रीलंका, तमिलनाडु और केरल इस कार्य के अग्रिम प्रकल्प-लक्ष्य हैं। खाडी देशों की समृद्धि के साथ और संयुक्त राष्ट्र संघ के छद्म प्रकल्पों के माध्यम से इन क्षेत्रों में हिन्दुत्वनिष्ठ समाज को अल्पसंख्यांक करने के प्रयत्न पूरे जोर-शोर से चल रहे है और पोप ने तो घोषणा ही कर रखी है कि तीसरी सहस्राब्दी में एशिया की भेडों को चर्च की अधीनता में ले आना उसका उद्देश्य है।

तमिलनाडु और केरल में धर्मान्तरण की परिकल्पना का सामना कांची मठ तथा उडुपी के पेजावर मठ ने करने का किंचित प्रयास किया है। पेजावर स्वामी श्री विश्वेश तीर्थ ने जब 'न हिन्दू पतितो भवेत्' की घोषणा की, तो उन्हें स्वामी जयेन्द्र की प्रेरणा से कांची मठ के शिक्षा संस्थानों और स्वास्थ्य संस्थाओं के अतिरिक्त हजारों भारत-धर्म पर प्रतिष्ठित संस्थाओं ने जन्म लिया, जहाँ के विद्यार्थी अंग्रेजी माध्यम से पढते हैं; किन्तु तिलक लगाकर विद्यालय जाते हैं। शंकर नेत्रालय का गौहाटी का अस्पताल तथा नेपाल में पोखर स्थित मेडिकल कॉलेज ने इन क्षेत्रों में आदर्श प्रतिमान प्रस्तुत किया है। अन्य मठ-मन्दिर भी अपने-अपने तत्त्व-ज्ञान के साथ-साथ शिक्षा और स्वास्थ्य के लोक-संग्रह के कार्यों में अग्रसर हो रहे हैं।

हिन्दू नवोन्मेष की इस दिशा में प्रगति को रोकने के लिए चर्च राजनीति के शस्त्र का प्रयोग करता आया है। कन्याकुमारी के विवेकानन्द-शिला-स्मारक के विरोध में प्रोफेसर हुमायूँ कबीर की गर्हित भूमिका रही थी। केरल के नीलक्कल चर्च के निर्माण के लिए वहाँ के मुस्लिम लीग के मन्त्रियों की गतिविधियाँ सूर्यप्रकाशवत् सर्वविदित है। कुरान ने ईसाइयत की चर्चा होने मात्र के नाते इनमें प्रेम या भ्रातृत्व नहीं है; किन्तु भारतोद्भूत सिद्धान्तों को ये अपने मार्ग का रोडा मानते हैं और इनके धर्म महासागर का महाज्वार भारत में आकर कुण्ठित हो गया, और भारतवर्ष का केवल ३० प्रतिशत ही अब तक अपने मूल धर्म को त्याग सका, यह इन्हें एकदम स्पष्ट है।

'पिछले निर्वाचन' में अस्त-व्यस्त और त्रस्त-भ्रष्ट हिन्दू समाज के मतों के बिखराव तथा हिन्दू-विरोधी मतों का साम्प्रदायिक निर्देशों के कारण एक ही ओर शत-प्रतिशत मतदान ने सत्ता की बागडोर पुन: चर्च के हाथ में सौंप दी है और आज शासन कम से कम तमिलनाडु में चर्च की उपेक्षा करके नहीं चल सकता। सुश्री जयललिता को पता है कि उनकी हार का प्रतिशत उतना ही है, जितना चर्च उन्हें दिला सकता है। अत: जयेन्द्र सरस्वती को बन्दी बनाकर उन्होंने एक झटके में अपनी हिन्दुत्वनिष्ठ छवि समाप्त कर दी है। सुश्री जयललिता आगामी विधानसभा चुनाव में, जयेंद्र सरस्वती को बन्दी बनाकर मुस्लिम और ईसाई मतों की सीढी पर चढकर विजय प्राप्त करना चाहती है।

आज चर्च धर्मान्तरण के उद्देश्य से जयललिता को अपना मोहरा बनाये हुए है। कभी ऑस्ट्रिया और हंगरी के धर्मयाचकों ने पोप के निर्देश पर हिटलर को समर्थन देकर उसे निरंकुश बना दिया था, आज सुश्री जयललिता भी निरंकुश शासक बनने का स्वप्न देख रही है। जयेन्द्र सरस्वती का बन्दी बनाया जाना तो केवल चर्च के लिए दक्षिण भारत की अर्गला को खोल देना है, जिसके मार्ग से विजय-दुन्दुभी बजाते हुए चर्च की सेना विजय लाभ कर सके। जयेन्द्र सरस्वती ने हत्या करायी, यह सुनकर मनुष्य क्या घोडे भी हँसेंगे। किस मठ मन्दिर के विरोधी नही होते?

उनकी उपेक्षा ही पर्याप्त होती है। यह हत्या तो किसी घिनौनी साजिश के तहत करायी गयी है।

सत्य यह है कि जयेन्द्र स्वामी के गरीब, उपेक्षित बस्तियों में आने-जाने के कारण उन सभी में हिंन्दू-समाज के साथ जुडाव सघन होता जा रहा था और उनका धर्म-परिवर्तन करानेवालों के सामने कठिनाई पैदा हो रही थी कि ये अपने सेनापतियों को क्या जवाब दें। साथ ही चर्च की आर्थिक क्षति भी हो रही थी। उदाहरणस्वरूप सभी मछुआरों को नित्य समुद्र में पकडी मछलियों में से एक बडी मछली चर्च को देनी होती है। हिन्दू बनकर पुन: अनुसूचित या पिछडी जाति में स्थान पाना व्ययसाध्य तथा आर्थिक दृष्टि से जटिल प्रक्रिया है; किन्तु जयेन्द्र स्वामी के कृपा-कटाक्ष से ही वे अपने को हिन्दू समझने लगते थे और चर्च को मछली, नारियल या अन्य प्रकार का 'जजिया' देना बन्द कर देते थे। चर्च को शक था कि कहीं यह मलयानिल तूफान न बन जाये। इसी तरह बाबरी ढाँचे के विषय में जब अटलजी ने इनका सहयोग माँगा, तो मस्जिद समर्थकों को यह बर्छी की तरह चुभा था। ध्यान रहे गत ६ दिसम्बर को पहली बार तमिलनाडु के मुस्लिम मुन्नेत्र कषगम ने मस्जिद के समर्थन में बडे जोश के साथ प्रदर्शन किया है।

हिन्दू समाज की निस्तेज स्थिति को देखते हुए भले ही जयेंन्द्र स्वामी को फाँसी हो जाये; पर इतिहास के न्यायालय में वे सर्वदा निर्दोष माने जायेंगे। क्या गुरु तेगबहादुर के बलिदान के समान यह बलिदान हिन्दू-समाज या विश्व के आस्तिक समाज में न्याय के प्रति निष्ठा का संचार कर सकेगा, इसका उत्तर समाज को, इतिहास को देना होगा।

इस प्रकरण का एक पक्ष है हिन्दू समाज को भ्रमित करने का; जो इस घृणित आरोप के विषय में सोचता है कि जरुर कुछ न कुछ दाल में काला होगा। आज देश के अंग्रेजी तथा उससे प्रेरणा लेनेवाले पत्र-समूह घोषित करते हैं कि कांची कोई मठ ही नहीं है, इस मठ के आंचार्य अद्वैत पीठाधिपति ही नहीं हैं या शंकर भगवत्पाद ५०९ ई.पू. में हुए ही नहीं थे, ये तो ७८८ इ. में हुए थे। जैसे त्रिरुचिरापल्ली के कैथोलिक चर्च को पं. गणेश अय्यर ने यह कहकर चूना लगाया था कि वे सिद्ध कर देंगे कि मदुरै की कामाक्षी और कन्याकुमारी की पार्वती वास्तव में कुमारी-कन्या मेरी ही हैं और करोडों रुपये लेकर पल्ला झाड लिया था कि नही सिद्ध हो सका, तो मैं क्या करूँ? उसी परंपरा में केवल अपप्रचार के बल पर कांची मठ को ही नहीं, सम्पूर्ण हिन्दू संस्कृति को द्रविड परंपराओं से पृथक् सिद्ध करने का प्रयास समाचारपत्रों और मीडिया के द्वारा किया जा रहा है। दूरदर्शन दिन में बारम्बार यह झूठ उद्घोषित करता रहा है कि शंकररमण मठ का पूर्व कर्मचारी था। मठ द्वारा विज्ञापन देकर स्पष्टीकरण के बाद इस असत्य का पर्दाफाश हो गया है।

सत्य यह है कि शंकर भगवत्पाद ने बहुत से मठ स्थापित किये थे, जहाँ अद्वैत-सिद्धान्त का पठन-पाठन हो सके। अद्वैत प्रचार हेतु उन्होंने चार आम्नायों की प्रतिष्ठा की थी, जो क्षेत्र के अनुसार अद्वैत सिद्धान्त के प्रसार को देख सकें। श्री मण्डन मिश्र सुरेश्वराचार्य के नाम से सभी मठों में इसलिए आचार्य माने जाते हैं; क्योंकि व्यवस्था के अनुभवी होने के कारण सभी आम्नायों की मयार्दाओं को व्यवस्थित करना शंकर के बाद उन्हीं का दायित्व था। इसी परंपरा में द्वारका मठ ४६१ ई.पू. ज्योतिर्मठ ४८६ ई.पू. पुरी मठ ४८५ ई.पू. और श्रृंगेरी म़ठ ४८४ ई.पू. में महामान्य के रूप में प्रतिष्ठित हुए थे। इसके पश्चात् आदि शंकर ४८२ ई.पू. से कांची आकर रहने लगे थे। अत: यह मूलाम्नाय के रूप में प्रतिष्ठित हुआ और ४७७ ई.पू. में यहीं उन्होंने शरीर छोडा था।

इस कामकोटि मूलाम्नाय मठ पर विपरीत परिस्थितियों तथा इस्लामिक दमन के बावजूद आचार्य परंपरा अक्षुण्ण रही है; किन्तु अन्य महाम्नायों में यह बार-बार खण्डित होने से मर्यादाओं का अनुपालन नही हो सका।

मठा चत्वा: आचार्या: चत्वरश्च धुरन्धरा:।
सम्प्रदायश्च चत्वार: एषा धर्म व्यवस्थिति:।।

का आदर्श मलिन हो गया । 'मठेतिवृत्तम्' के अनुसार सिन्धु सौवीर सौराष्ट्र पश्चिमाम्नाय शारदा पीठ के अंग, बंग, कलिंग, मगध, उत्कल, बर्बर गोवर्द्धन पीठ के, आन्ध्र द्रविड, कर्नाटक, केरल, श्रृंगेरी पीठ के तता कुरु, कश्मीर, काम्भोज, पांचाल ज्योतिष्पीठ के अंतर्गत थे। (श्लोक

१७-२०) इन्हें स्पष्ट आज्ञा थी कि..

स्व स्व राष्ट्रं प्रतिष्ठित्यै संचारः सुविधीयताम्।
मठे तु नियतं वासः आचार्यस्य न युज्यते॥ (श्लोक-२२)
यह भी आज्ञा थी कि- परस्पर विभागे तु प्रवेशो न कदाचन। (श्लोक २५) अर्थात एक-दूसरे के विभाग में कभी (अनुमति के बिना या तीर्थयात्रा छोड कर) प्रवेश न करें और कलहारम्भ सम्पत्तेः अतः तां परिवर्जयेत्। (श्लोक २६)

किन्तु कलि प्रभाव से सैकडों शंकराचार्य देश में पैर पुंजाते घूम रहे हैं। कोई दो मठों का व्याख्यान पीठाधिपति बना बैठा है, तो कोई सभी आम्नायों का स्वयंभू निर्देशक बना बैठा है। कोई असफल राजनेता है, तो कोई निपुण अभिनेता है और ये सभी मिलकर अद्वैत परंपरा पर कुल्हाडा चलाने के लिए इस्लामी आतंकवाद और कैथोलिक उग्रवाद के एजेण्ट-सिद्ध हो रहे हैं। पोप जब भारत आया था, तो उसके स्वागत में कुछ स्वयंभू शंकराचार्य बडी निर्लज्जता से दूरदर्शन को देदीप्यमान कर रहे थे।

आशा थी कि अद्वैत सिद्धान्त के सभी यति शंकराचार्य के रूप में ही वंदनीय होंगे, किन्तु आज की स्थिति में सुधन्वा की रानी की तरह भारतमाता पुकार रही है-किं करोमि कः गच्छामि को मठान् उद्धरिष्यति? क्या इस विघटित, स्वार्थपर, दम्भ परायण हिन्दू समाज का कोई संन्यासी कह सकेगा-''मा विषीद जगन्माते धर्माचार्योस्मि भूतले।''

सभी जानते हैं कि जयेन्द्र सरस्वतीने यह कहने का प्रयत्न किया और इसी कारण आज उनको इस दशा में डालकर अन्य हिन्दू धर्माचार्यों, साधु-सन्तों को भयाक्रान्त करने की नीयत से ही यह षड्यन्त्र रचा गया है।

('राष्ट्रधर्म' की सौजन्यसे)

आलंदी में श्रीरामकथा संपन्न
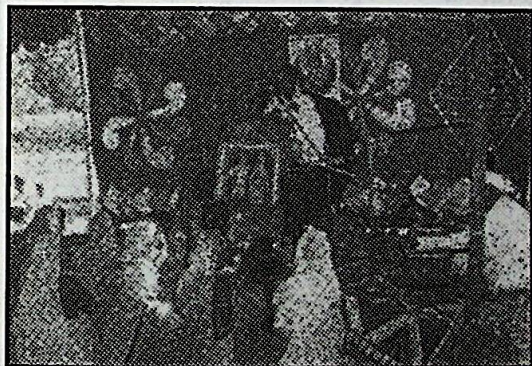
श्रीराम कथा ज्ञानयज्ञ, भांडगांव (यवत) जि.पुणे. महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के आलंदी स्थित सद्गुरु महाराज वेद विद्यालय के प्रधानाचार्य वे.मू. अनंतशास्त्री मूले द्वारा १ डिदसंबर से१९ दिसंबर तक श्री जगदेवदास बाबा आश्रय भांडगांव जि. पूणे यहाँ श्रीरामकथा ज्ञानयज्ञ संपन्न हुआ। आश्रम के प्रमुख महंत ओंकारदास बाबा इनके कुशल संयोजनसे यह कथा संपन्न हुई। ह.भ.प.पू.प्रज्ञाचक्षु मुकुंदमहाराज जाटदेवलेकर इनके कीर्तनसे इस कथा का समापन हुआ।

विशेष उल्लेखनीय बात यह है। कि परम श्रद्धेय आचार्य श्री किशोरजी व्यास इनकी अनुज्ञासे और वे.मू. अनंत गुरुजी इनकी निःस्पृहता की भावना से यह कथा की द्रव्य राशी आलंदी वेद विद्यालंय के सहायार्थ समर्पण की गई। उनकी भावपूर्ण, सुमधुर और ओजस्वी वाणीसे प्रभावित होकर असंख्य भक्तोंने वेदविद्यालय के लिए यथोचित उत्स्फूर्त दानराशि दी। वेदविद्यालय संचालन समितीके सदस्य श्री. हरिप्रसादजी व्यास, श्री. आबासाहेबजी रासकर आदी कथाकाल में एक दिन उपस्थित थे। पाठशाला के भूतपूर्व छात्र वे.मू. विनोद पाठक इनका विशेष सहयोग मिला।

विद्यालय के अध्यापक द्वारा यह द्रव्य समर्पण की पहलीही घटना हैं।

शब्दांकन
छात्र-वैभव अ.जोशी

श्रद्धांजलि

ऋषितुल्य व्यक्तित्व का वियोग...

वंदनीय श्री. दत्तोपंत ठेंगडीजी इस संसारमें नही रहे। वास्तवतामें, यह कहना भी गलत है। क्योंकि, सामान्य दृष्टिसे सोचेंगे तो, तन से दत्तोपंत जी नही हैं, लेकिन उनका व्यक्तित्व इतना विशाल एवं बहुआयामी है कि, मनमें उनकी प्रतिमा निरंतर रहेगी, कर्तृत्व की झाँकी नजरसे कभी भी नही हटेगी।

ठेंगडी जी का मतलब विचार, संगठन, राष्ट्र की आवाज, मजदूर की आत्मा तथा उत्साह से भरा बहता हुआ कार्य का झरना। इससेही आगे, दत्तोपंत जी याने ध्येयवाद, ऋषितुल्य परंपरा एवं और बहुत खूब...।

'हिंदुत्व-भारत' इस संकल्पना का मूत रूप था दत्तोपंत ठेंगडीजी। प्रभावी, तेजस्वी, परोपकारी, सादगीपूर्ण व्यक्तित्वके रूपमें दत्तोपंत जी हर एक के मन में चिरकाल स्थामि हुए। स्वयं ठेंगडीजी ने पं. दीनदयाल उपाध्यायजी को श्रद्धांजलि अर्पण करते हुए कहा था, 'मृत दीनदयाल, जीवित दीनदयालसे अधिक प्रेरणादायी एवं विचारोत्तेजक है।' यही, उन्होंने कही हुई बात स्वयं ठेंगडीजी पर लागू नही होती क्या?

संगठन के क्षेत्र में जो विविध अनमोल रत्न भारतमाता की झोली में थे उनमें से बहुत तेजस्वी रत्न दत्तोपंतजी रहे। वे लाखों मजदूरों के केवल संरक्षक, संघटकही नहीं मार्गदर्शक भी थे। नेतृत्व के गुणोंका वे दीपस्तंभ थे। विदेशी विचारोंपर आधारित साम्यवादी नेतृत्वदायी आंदोलन और कलुषित, स्वार्थी राजनीती करनेवाले तुच्छ राजनेताओं की भीड में भारतीय संस्कृतिका, राष्ट्रवाद का धर्मदण्ड लेकर खडे ऋषिही थे। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर से लेकर जहाल साम्यवादी, काँग्रेसके उच्चतम नेतागण एवं भाजपा के श्रेष्ठतम नेताओंसे उनके मैत्रीपूर्ण संबंध थे। व्यक्तिगत संबंध में वे अत्यंत मृदु तथा राष्ट्रविरोधी, मजदूर विरोधी नीतियों के वे कडे विरोधक थे।

जब उन्हें भाजपा सरकार की आर्थिक नीतियाँ तथा निर्णय कुछ मात्रा में राष्ट्र, मजदूर विरोधी प्रतीत हुए तब उन्होंने उसको फटकारने में भी परहेज नही किया। ठेंगडी जी ने मजदूर क्षेत्र में राष्ट्रीयत्व का, संस्कृति संवर्धनका तथा मानवता का एक नया मानदंड प्रस्थापित किया।

स्वयंसेवक, कार्यकर्ता और प्रचारक इन सबको लगता था कि, ठेंगडीजी मेरे लिये उपयुक्त मार्गदर्शक हैं। कार्यकर्ताओं को इकट्ठा करके उनके साथ गप्पे करते करते ठेंगडीजी हर एक के दिल में अपनी विशेष जगह निर्माण करते थे। वे कार्यकर्ता आजीवन उनके साथी, सहयोगी बन गये। सादगी, सरलता, वैचारिक परिपक्वता एवं निश्चित ध्येय पर चलनेवाले ठेंगडी जी ने एक ऋषि के जीवनका आदर्श सबके सामने रखा। ठेंगडी जी जैसे ऋषितुल्य व्यक्तित्वका वियोग ..... मजदूर संगठन को, साथियों को, पूरे परिवार को अकेलापन का अनुभव दे रहा है।

दत्तोपंत ठेंगडी जी को, एक ऋषितुल्य व्यक्तित्व को शतकोटि हृदय से श्रद्धांजलि।

मीराँ पंचशती के अवसर पर भक्तिन, प्रेम-दीवाणी विरहिणी मीराँ का स्मरण करते ही पीत साडी पहने, गले में माला, हाथ में इकतारा लिए हुए तल्लीन होकर कृष्ण को पुकारती हुई, ऐसी पवित्र मूर्ति आँखों के सम्मुख साकार हो उठती है। कृष्ण को अपना प्रेमी, पति मानकर स्वयं को उसके चरणों में आत्मसमर्पित करने वाली मीराँ का प्रेम लौकिक का अलौकिक से, मूर्त का अमूर्त से, आत्मा का परमात्मा से किया जाने वाला पवित्र, दिव्य प्रेम है, जिसमें विरह की व्याकुलता एवं मिलने की आतुरता इस उत्कटता से प्रकट होती है जो मीराँ की सादगी, सरल शद्बावली, सुरों की कातर आर्तता के कारण सभी को व्यथित एवं मंत्रमुग्ध कर देती है।

मीराँ जीवन में कटुता के विरूद्ध अनवरत संघर्ष करके भी अपने मन को मधुर बनाए रहीं, इसका कारण उनकी अपराजेय निर्भय आत्मशक्ति, प्रकृति और प्रारंभिक शिक्षा थी। साहित्य और संगीत का प्रारम्भिक ज्ञान उनकी भक्ति-भावना की मनोरम अभिव्यक्ति की योग्यता का सहज संगी बन गया। साधना की ओर उन्मुख होने के क्षण से सिद्धि की बेला तक की आध्यात्मिक यात्रा में मीराँ की भावना क्रमशः लौकिक से अलौकिक की ओर बढती गई, जिसमें प्रमुख तीन सोपान थे-प्रथम रोष एवं करूणा का, दूवितीय विराग, दास्य-दैन्य का एवं तृतीय प्रेम का।

उस समय जब नारी मर्यादाओं में जकडी हुई थी, ऐसे समय में मीराँ का लीक से हटकर चलना, लोक-मर्यादा को ठुकराना, इस कारण उन्हें राजकीय रोष एवं अनेक प्रकार की प्रतारणाएँ सहनी पडीं। इससे उनके मन में समाज के प्रति रोष उत्पन्न हुआ। लौकिक विवाह के पश्चात् जब मीराँ को वैधव्य का अभिशाप भोगना पडा तो मीराँ के मन मे वैराग्य की तीव्र भावना उत्पन्न हो गई। सभी बन्धनों को त्यागकर उन्होंने अपनेआप को प्रभु के प्रति समर्पित कर दिया। इससे वैराग्य, दैन्य, दास्य का भाव मिटकर केवल प्रेम ही रह गया।

"मीराँ की प्रेममय भक्ति"

- श्रीमती राजश्री अ. नगरकर

मीराँ का जन्म एक सामंती परिवार में हुआ था। उन दर दूदा जी की छाया रही, जो स्वयं एक साधक, धर्म के अनुचर और युद्ध-वीरता के स्वामी थे, जिनके कारण शैशव से ही मीराँ के साधु-संतों और विभिन्न विचारधाराओं के धर्म-प्राण व्यक्तियों के सम्पर्क का सौभाग्य मिला। सत्संग मीराँ के जीवन की प्रमुख विशेषता थी। इसी के कारण उनके जीवन में भौतिक संघर्ष आए। मीराँ ने अपने पदों में साधु-संगति के महत्त्व को दर्शाया है-

"साधु संगत मा भूल ना जावां मूरख जनम गुमावा॥" मीराँ ने अपने पदों में सद्गुरु-महिमा का भी उल्लेख किया है। उनके सद्गुरू योगीश्वर श्रीकृष्ण थे। उन्होंने 'राम-रतन-धन' प्राप्त किया था। मीराँ इसी 'राम-तत्त्व' की उपासिका थीं, जो कबीर के निर्गुण राम से अभिन्न हैं। उनके राम संत परंपरा में प्रतिष्ठित निर्गुण राम हैं, वाल्मीकि और तुलसी के 'दशरथ-सुत' राम नहीं। राम की लीलाओं के प्रति उनकी कोई आसक्ति नहीं। उनके माधुर्य-मंडित मानस

में ऐश्वर्योपासना की गुंजाइश कहाँ? तात्पर्य यह कि मीराँ की पदावली में 'राम' को जो महत्त्व दिया गया है वह बिल्कुल निर्गुणियों और संतों के ढर्रे का है।

मीराँ पर विशेष प्रभाव रामानन्द की 'प्रपत्ति', चैतन्य महाप्रभु की माधुर्य भक्ति तथा माधवेन्द्रपुरी की गोपाल-पूजा का है। मीराँ के पूर्व हिंदी में जिस कृष्ण-भक्ति साहित्य का सृजन हुआ वह कृष्ण-भक्ति 'रसमयी' थी। इसकी उत्तराधिकारिणी 'मीराँ' अनायास बनीं। इसे रामानन्द द्वारा प्रवर्तित संत मत का ही प्रसाद समझना चाहिए।

मीराँ की भक्ति माधुर्य भाव की थी। किंतु सगुणात्मक होने से रैदास, कबीर, दादू आदि संतों से एवं रहस्यात्मक होने से सूरदास, नन्ददास और हितहरिवंश जैसे संतों से भिन्न है।

मीराँ की माधुर्य भक्ति वैयक्तिक अनुभूतियों से प्रेरित है। उनका माधुर्य भाव स्वसंवेद्य है। उनका समस्त माधुर्य-साधनामें अधीर प्राणों की उद्विग्नता, परम वियोगी की आत्मलीनता अविरल और अटल प्रेम की अनन्यता एवं साक्षात् मिलन की उत्कण्ठा के अनेक रूप मिलते हैं।

मीराँ में भक्ति-भावना सहज और स्वाभाविक अवश्य थी, शैशव में वह अंकुरित भी हो गई थी, पर वह पल्लवित और पुष्पित हुई वैधव्य के बाद ही। गिरिधर नागर के प्रति मीराँ का भाव पत्नी-भाव और प्रेम गोपियों का सा था। रागात्मकता का उदात्तीकरण उन्हें भाव की उस महादशा तक ले गया है जो माधुर्य-शास्त्र में भावोत्कर्ष की चरम दशा एवं अति दुर्लभ और अमृतस्वरूप मानी गई है। उनकी तल्लीनता, उनका प्रणय-निवेदन और उनका आत्मसमर्पण इतना दिव्य है कि वह स्वयं मीराँ की भक्ति के प्रति भक्तों के मन में भक्ति जगाता है। नन्ददास, सुन्दरदास, बख्तावरी आदि अनेक भक्त कवि-साहित्यकारों ने मीराँ को कृष्ण की प्रेम-भाव की भक्त कहा है-

"नरसी के प्रभु साँवलिया हो, सूरदास के श्याम।
मीराँ के प्रभु गिरिधर नागर, तुलसिदास के राम॥"

मीराँ के श्रेयमार्ग अपनाकर श्रीकृष्ण द्वारा उपदिष्ट ज्ञान, कर्म, भक्ति तीनों योगां में से भक्ति-योग को ग्रहण किया। नाभादास के कथन के अनुसार, "मीराँ ने प्रेम भाव की भक्ति की थी, उनका प्रेम गोपियों का सा था और प्रेम का आलम्बन रसिक शिरोमणि श्रीकृष्ण थे।"

मीराँ में भाव-भक्ति की प्रधानता थी। भाव-भक्ति का जब परिपाक होता है, तब वह रसरूप प्रेमाभक्ति में परिणत हो जाती है। मीराँ के अनेक पदों में प्रेमाभक्ति की व्यंजना ह-

"प्यालो अमृत छांड्या से कुए। पीवां
कडवांनीयारी॥" कहीं-कहीं 'रसीली भक्ति'
का भी उल्लेख किया है-
"मीराँ श्री गिरिधर नागर भक्ति रसीली जाँची॥"

नारद-भक्ति सूत्र के अनुसार प्रेमरुपा भक्ति एक होकर भी 'आसक्ति' के आधार पर एकादशधा होती है। व्रज की गोपियों में समस्त आसक्तियों का समाहार था। मीराँ में भी अधिकांश आसक्तियाँ पल्लवित हुई थीं। उनमें कान्तासक्ति, रुपासक्ति और तन्मयासक्ति विशेष थी। परमविरहासक्ति तो जैसे उनके काव्य-साधना की प्राण-धारा थी। उनका समस्त काव्य रूपासक्ति और परमविरहासक्ति के ताने-बाने से बना है।

श्रीवैष्णव मत के अनुसार, "भगवान् के चरणों में अपने को लुटा देना, आत्माभिमान छोडकर, सब धर्मों का परित्याग करके शरणापन्न होना ही 'प्रपत्ति' है। यह भक्ति का सार है।" मीराँ ने शरणागति स्वीकार कर आर्त स्वर में कहा था-

"थे विए कोए खबर ले गोबरधन गिरिधारी॥"

मीराँ के पदों में दास्य-भक्ति का भी कहीं-कहीं उल्लेख है- "म्हाने चाकर राखो जी॥" मीराँ ने अपने आराध्य को अनेक नामों से पुकारा है। यथा- रणछोड, गोपाल, कान्हा, गिरधर आदि। सांप्रदायिक सीमा के बाहर, श्रीकृष्ण के असीम सौंदर्य एवं भक्ति रस में मग्न प्रेम पयस्विनी मीराँ ने कई पदों में आराध्यदेव के रूप में राम का स्मरण किया है। किंतु वहाँ राम से उनका तात्पर्य निर्गुण-निरंजन ब्रह्म से है। उनका प्रियतम राम गिरधर नागर होने के साथ ही 'सुषमेण सेन' पर विहार करने वाला 'अमरपुर का निवासी भी है। एकाध स्थलों पर इन्होंने 'अहिल्योद्धार', शबरी के आतिथ्य आदि राम की लोक-यात्रा से संबंधित घटनाओं की भी चर्चा की है, किंतु वहाँ उनका उद्देश्य रामचरित का वर्णन न होकर भगवान की शरणागत वत्सलता तथा उदारता का

गुणगान प्रतीत होता है-

"हरि बिन कूण गति मेरी।
दासी मीराँ राम रटत है में सरण हूँ तेरी॥"

कृष्णोपासना में राम का यह स्वरूप परवर्ती काल में भी समादृत रहा। इससे सहज ही मीराँ की महिमा अनुमेय है।

मीराँ सगुण स्वरूप की साधिका थीं। उन्होंने सामान्य विधिविधानों का भी सदैव पालन किया था-

"माई म्हा गोविंद गुण गाश्यां।
चणाम्रतरो णोम शकारे नित उठ दरशन जाश्यां॥"

इस पद में नवधा भक्ति के सभी अंगो-श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, वंदन, अर्चन, दास्य, सख्य एवं आत्म-निवेदन आदि का समावेश है।

लोकदृष्टि में परिणय को, प्रणय की परिणति का सर्वोच्च सोपान माना जाता है। तान्त्रिक साधनामें यही 'शिव' और 'शक्ति' का मिलन है। किंतु मीराँ विवाह के पश्चात् भी प्रणयक्रीडा या विषय-सुख से वंचित रही। इसीलिए उनके पदों में संयोग की अपेक्षा वियोग ही मिलता है। मीराँ के काव्य में विरह-वेदना की सूक्ष्मातिसूक्ष्म अनुभूतियाँ मेघाच्छादित सन्ध्याकाश में प्रतिपल रंग बदलती आकृतियों जैसी दिखाई देती हैं। हृदय के उच्छ्वास अनुभवों की आँच में तपकर, आँसुओंकी तरलता में डूबकर प्रवाहित हुए हैं इसलिए हृदय को द्रवित करने की अद्भुत क्षमता रखते हैं। मीराँ मूलत: प्रणय-पंथ की अनुगामिनी थीं। मीराँ और कृष्ण का संबंध प्रणय-मूलक है। सामाजिक बंधनों, संबंधों और रुढ नैतिकता के सबल बांधों की उपेक्षा करके, नारीत्व के प्राणों में मचलती हुई आत्मसमर्पण की चिरंतन दुर्दम्य कामना ही मीराँ के प्रण का मूल उत्स है। मीराँ की भावना नारीत्व के चिरंतन अभाव की कामना है, जो पूर्णत्व चाहती है, अपनेआप को संपूर्ण रूप से समर्पित करके प्रिय में समाकर सामरस्य का अखंडित आनंद भी प्राप्त करना चाहती है। किंतु देह की अपनी सीमाएँ हैं जो इस प्रकार के मिलन की अनुमति नहीं देती। प्रश्न हैं जो अनुत्तरित रह गए हैं। अपने प्रभु के साक्षात् दर्शन के अभाव में किसी पंखहीन पक्षी की तरह लाचार हैं, किसी घायल हिरनी की तरह विभ्रांत हैं। अत्यंत कातर होकर वे बार-बार गिडगिडाती हैं-

"तडफां-तडफां जीयरा जायां कब मिलिया दीणाणाथ॥" मीराँ ने विरह की तीव्रता को कोयल, पपीहे, दादुर, मोर आदि के द्वारा दर्शाया है। विरहाग्नि में जलते हुए हृदय खीझ निकलती हैं। वे पपीहे को उपालांभ देती हैं-

"पीपीहा रे पिव की बाणी न बोल॥"

सावन-भादों के महिने बडे ही दाहक एवं विरहोत्तेजक होते हैं। मेघों का लरजना, गरजना हृदय को कँपा देता है। सावन-भादों में जब रिम-झिम बुँदें बरस रही हैं, इधर मीराँ रो रही हैं-

"बादल देख झरी हो स्याम मैं बादल देख झरी॥"

मिलन की लालसा उस समय तीव्र हो जाती है जब माघ-फाल्गुन के महिने में मलयानिल के झोंके हृदय के तारा को झकझोरते हैं और पास में सखियाँ केलि-क्रीडा में मदमस्त होती हैं। सारी वसुंधरा वासंती साडी पहनकर अपूर्व साज सजाती है, सर्वत्र मिलन का वातावरण है। चित्त 'किसी' से मिलने के लिए उद्दीप्त हो जाता हैं, रोम-रोम में मिलन की लालसा जगकर अंगडाईयाँ लेने लगती हैं, तब मीराँ का घायल मन छटपटा उठता है-

"किण संग खेलूँ होरी, पिया तजि गये हैं अकेली॥"

इस प्रकार सावन और फाल्गुन में प्रकृति के नाना रुपों एवं विलासों के उद्दीपन में मीराँ का प्रेम-विव्हल हृदय विरह के अंतिम छोर तक पहुँच जाता है।

जब साँवरे माया का आवरण हटाकर स्वयं उनके सामने उपस्थित होते हैं तो मीराँ के हृदय का कण-कण उनके प्रेम में सराबोर हो जाता है और शुरु होता है अलौकिक प्रेमकी दिव्य अनुभूतियों का इतिहास। ईश्वर के प्रति इस परम प्रेमरूपा और दिव्य स्वरुपा भक्ति को पाकर मीराँ सिद्ध हो गई हैं, अमर हो गई हैं। यह प्रेम गुणरहित, कामनारहित है। प्रतिक्षण बढता जाता है, सूक्ष्म से सूक्ष्मतर है। मीराँ ने इस प्रेम को पाकर केवल प्रेम को ही देखा है, प्रेम को ही सुना है, प्रेम का ही वर्णन और चिंतन किया है इसलिए उनके लिए सारा जगत् प्रेममय हो गया है। प्रेमाभक्ति का विस्तार उन्हें रहस्यवादी चेतना के अनेक अतीन्द्रिय आयामों से परिचित कराता रहा है। मीराँ ने आजीवन जिसे अपने आँसुओं से सींचा वह प्रेम की वेल थी, उस पर खिलने वाले फूल भक्ति के थे और उनकी सुगंध अलौकिक प्रेम की रहस्यानुभूति थी। यही उनकी भक्ति का मर्म है।

❀❀❀

गीता परिवार समाचार

गीता परिवार (कटक) प्रणीत बाल संस्कार शिविर

उडिसा राज्य में गीता परिवार का कार्य प्रारम्भ हुआ। कटक शहर में दि. १८/१२/०४ से २४/१२/०४ तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें लगभग ६० बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। बच्चों को मार्गदर्शन करने के लिए पूना से श्री कमलेश भैय्या का आगमन हुआ।

बच्चों को नियमित रुपसे सुविचार, ध्यान, प्रार्थना, मंगल स्मरण, कहानियाँ, खेल, गीतादर्शन, योगासन आदि सिखाये गये।

शिविर का उद्‌घाटन बच्चों के कर कमलों से किया गया। समापन समारोह में संपर्क प्रमुख श्री किशोरजी

भराडिया की माताश्री ने दीपप्रज्वलन किया। ७ दिनों में बच्चे इतने एकरूप हो गये कि विदाई के समय सबकी आँखे भर आयी। बच्चों ने कहाँ ऐसे शिविर साल में ४/५ बार होने चाहिये। कटक में शुरु हुआ ये कार्य सद्‌गुरुदेव के आशिर्वाद से आगे बढता रहे। संपर्कप्रमुख श्री किशोरजी भराडिया की धर्मपत्नी सौ ज्योति पूरे शिविर मे उपस्थित रही।

बच्चे सजल नेत्रोंसे विदा हुए, पुनः शिविर में आऐंगे ऐसा वचन दिया।

गीता परिवार (जयपुर) प्रणीत बाल संस्कार शिविर

प.पू. गुरुदेव की प्रेरणा से गीतापरिवार (जयपुर) प्रणीत 'बाल संस्कार शिविर' का आयोजन दि. ५/१२/

२००४ से ११/१२/२००४ में आदर्शनगर, गोविन्दमार्ग में किया गया।

बच्चों के मानसिक विकास के लिए ध्यान, उपासना सत्र, शारीरिक विकास के लिए योगासन, सूर्यनमस्कारादि, बौद्धिक विकास के लिए भिन्न-भिन्न संस्कार-प्रद विषयोंपर चर्चा व कहानी सत्र विशेषरुप से लिए गये। प्रतिदिन स्पर्धाऐं होती थीं।

आदरणीय श्री कमलेश भैय्या ने यशस्वी जीवन के सूत्रों तथा "भगवद्‌गीता के १२वें अध्याय से भगवान को कौन सा विद्यार्थी अच्छा लगता है" से अवगत कराया। प. माणिकचंद शर्मा ने "चन्दन है इस देश की माटी" में

गीत सिखाया। लगभग १०० बच्चों ने शिविर में भाग लिया।

शिविर के समापन समारोह में स्वयं प.पू. गुरुदेव आचार्य श्री किशोरजी व्यास उपस्थित थे, बच्चों के उत्साह को देखकर गदगद हो गए।

बच्चों ने उनके समक्ष 'धर्मतत्व मंत्र' संस्कृत नाटक प्रस्तुत किया। आचार्य श्री ने कहा गीतापरिवार का कार्य यूँ ही आगे बढता रहे। उन्होंने संपर्क प्रमुख सौ. गायत्री झंवर का शाल पहनाकर सन्मान किया। सभी कार्यकर्ताओं के सहयोग से शिविर सम्पन्न हुआ ॥

❋❋❋

गीतापरिवार (परळी) प्रणीत श्रीरामकथा

गीता परिवार संचलित बाल संस्कार केंद्र परळी

तीन दिवसीय 'रामकथा संगीतमय' का आयोजन किया गया,। बालको के लिए संगीतमय रामकथा का आयोजन भारत वर्ष में पहली बार ही हुआ। इसका सौभाग्य बाल संस्कार केंद्र परली के बालको को मिला।

यह कथा सुनाने के लिए आचार्य श्री किशोरजी व्यास के शिष्य श्री कमलेशजी भैय्या पुणे से पधारे थे। इन्होंने अपनी मधुर वणी से बच्चों का मन जीत लिया। बच्चों को २ समय मे २-२ घंटे तक एक ही बैठक में कथा के लिए बैठाकर रखना असंभव है। लेकिन कमलेशजी के अपने संगीतमय संकीर्तन व कथा के रस से बच्चे झुमने गाने लते थे।

कथा की शुरुआत रामजी की प्रतिमा की पूजा करके दीप प्रज्वलन करके आरंभ हुई। छोटे छोटे बालको द्वारा कमलेशजी का स्वागत एवं आरती की गई।

पहले दिन की कथा में लव-कुश को कही गई राम कथा, ध्रुव प्रल्हाद व राम जन्म की कथा हुई। राम जन्म झांकी बच्चों द्वारा प्रस्तुत की गई।

श्री कमलेशजी भैय्याने पौराणिक संदर्भ देते हुए बच्चो को संस्कारो का भी काफी ज्ञान सिखाया। आज के युग में युवा पिढी के लिए ऐसी रामकथा एवं संस्कारों की सीख की बहुत जरुरत है। कमलेशजी बीच-बीचमें बच्चों को सुबह जल्दी उठना, झुठ नही बोलना, माता-पिता बडों का आदर करना, उन्हें सुबह प्रणाम करना, माता, पिता घरमे कोई बात नही छिपाना, कोई भी काम करने से पहले भगवान का नाम लेकर शुरु करे तो कार्य सफल होगा। इन सब बातो का बच्चों पर काफी प्रभाव पडा।

दूसरे दिन की कथा में 'राम विवाह' सीता स्वयंवर की कथा बताई। राम विवाह की झांकी भी बच्चो ने बनायी। और तिसरे दिन आखरी दिन की कथा में राम राज्य अभिषेक की कथा एवं झांकी प्रस्तुत की गई।

रोज प्रातः ९ से ११ तथा दोपहर ३ से ५ तक होती थी। दो समय आरती एवं प्रसात वितरण बच्चे करते थे। आखरी दिन श्री कमलेशजी का सत्कार गीता परिवार द्वारा शाल, श्रीफल एवं 'राज्य दरबार' की प्रतिमा स्मृतिचिन्ह देकर किया गया। गोविंद सोमाणी, सौ. स्मिता दरक, नीता तोतला द्वारा यह सत्कार किया गया। सौ. स्मिता दरक ने अपने विचार व्यक्त किये तथा बच्चों में से पूजा बियाणी ने अपने विचार प्रगट किये। मारवाडी युवा मंच की ओर से चंदुलालजी बियाणी ने अपने विचार प्रगट किये।

फिर संस्कार फेरी निकाली गई। बीडसे आये हुए, गीता परिवार के बीड जिल्हा प्रमुख श्याम सुंदरजी बाहेती ने नारियल फोडकर शुरु की। राम राज्य की झांकी एवं विविध महापुरुषों की वेशभूषा तथा रामायण के पात्र इस प्रकार बच्चे बात कर घोषणा देते हुए संस्कार फेरी संपन्न हुई।

❋❋❋

पुनर्मिलन

- युगलकिशोर कोटरीवाल (कोलकाता)

कुरुक्षेत्र की पुण्य भूमि, और सूर्यग्रहण का मौका था।
जहाँ हुआ था युद्ध भयानक, मिलन हुआ अनोखा था॥
तीरथ करने को प्रभु आये, संग पूरा परिवार था।
माता-पिता-रानियों को ले, कुछ दिन का यहाँ वास था॥
सर्वग्रास ग्रहण होना था, नर सैलाब भारी उमड़ा।
पुण्य कमाने हर कोने से, जन-जन आया छोटा-बड़ा॥
एकाएक प्रभु के मन में, आयी यादें बचपन की।
सोचा उन्होंने होगा-यहाँ, कोई न कोई गोकुलवासी॥
तुरंत लगे वो ढूँढने, अपने, प्यारे गोपी गोपों की।
सौ वर्षों से जो मिले न थे, मिलने की आतुरता थी॥
अन्तर्यामी को कुछ पल, लग गये खोज में अपनों की।
आखिर में प्रभु ने पाया स्थल, रूके जहाँ थे ब्रजवासी॥
आश्रम सी वो जगह थी सुन्दर, प्रभु ने किया प्रवेश वहाँ।
माला में गूँथती फूलों को, बैठी माता यशोदा जहाँ॥
हृष्टपुष्ट थी माता यशोदा, छोड़ा जब प्रभु ने गोकुल।
रह गयी मात्र कंकाल विरह में, देख हुए वो अति व्याकुल॥
गूँथ रही थी माला कर से, मन से थी पूरी कृष्णमयी।
दौड़ पड़े, वो रूक न सके, जा गिरे गोद में प्रेममयी॥
हुई अत्यन्त विस्मित माता, जब देखा-लाला को चरणों में।
कर न सकी विश्वास सहज ही, सोचा, खोयी हूँ सपनों में॥
टिका हुआ था जीवन जिससे, मिलने की आशाओं से।
वरना होता मुक्त कभी, भव की इन बाधाओं से॥
देख उसे निज चरणों में, माता कुछ भी कह न सकी।
पूछा प्रभु ने ही रूँधें कंठ से, कैसी हो माँ ममतामयी॥
अनेक दिनों की संचित पीड़ा, बहचली अश्रु की धारा में।
आवो देवकीनन्दन आवो, किया सम्बोधित यों माँ ने॥
हम तो भूल सके न तुमको, भुला दिया तुमने मोहन।
तुमको पाकर सोचा हमने, साथ रहोगे तुम हर क्षण॥
कैसे झेली विरह वेदना, कैसे तुम्हें बतायें हम।
हुआ न ऐसा क्षण जीवन में, जिस पल याद न आये तुम॥
अश्रुपात करती माता का, हृदय, कृष्ण में डूब गया।
आखिरमें माँ ने ले करमें, कृष्ण का मस्तक चूम लिया॥
सुन सम्बोधन यह माता का, अत्यन्त हुए व्याकुल भगवन्।
जानी माँ के मन की पीड़ा, बोल पड़े यों मधुसूदन॥
कहा उन्होंने कातर स्वर से, सच है, हूँ मैं देवकीनन्दन।
किन्तु पहले और किसी के, हूँ मैं नन्द यशोदानन्दन॥
इस जीवन पर सबसे ज्यादा, माँ अधिकार तुम्हारा है।
कह देता हूँ माँ मैं सबसे, पहले कृष्ण तुम्हारा है॥
छोड़ा था जब गोकुल मैंने, लौटूँगा शीघ्र ही सोचा था।
पता नहीं था किन्तु मुझे माँ, आगे जो-जो होना था॥
भारतभूमि का हर प्राणी, अनाचार से पीड़ित था।
उसे मिटाने का माँ मैंने, लिया उठाया बीड़ा था॥
बंधा हुआ कर्तव्यपाश से, व्यस्त रहा पूरा जीवन।
सोचा जब भी मिल लूँ तुमसे, आन पड़ी कोई उलझन॥
निज कर्म करना धर्मपूर्वक, फल मोह आशा त्याग कर।
जीवन यदि चाहो सुखद, तो ऐसा ही व्यवहार कर॥
इसी सिद्धांत का प्रतिपादन, मेरे जीवन का मूल था।
किया यही और समझाया, खोया नहीं समय आबद्ध था॥
माँ मत सोचो विरह की पीड़ा, केवल तुम्हें सतायी है।
सच कहता हूँ मैंने भी यह, कम नहीं किसी से पायी है॥
अक्सर याद तुम्हारी आती, आँखें नम हो जाती थीं।
कितनी होगी पीड़ा तुम्हारी, यह कल्पना मुझे कँपाती थी॥
माँ के मन को ढाँढस देकर, प्रभु आये बाबा के पास।
किया प्रणाम चरणों में उनके, बाबा को हुआ अति उल्लास॥
था रोमांचित रोम-रोम जब, लिया कृष्ण को आलिंगन में।
शब्दों से जो कह न सके, वह कहा सभी कुछ नयनों में॥
बहुत तरह की बातें करके, प्रभु आये गोपों के पास।
मिले सभी से प्रेम पूर्वक, बिछुड़न का था न कोई भास॥

भक्ति-ज्ञान-कर्म की त्रिवेणी मानव जीवन

-पुष्करलाल केडिया

भक्ति, ज्ञान और कर्म - वेदों के प्रज्ञावान ऋषियों से लेकर वर्तमान युग के मनीषियों तक ने इन तीनों की तात्विक मीमांसा करके, संसार को इनकी महत्ता का बोध कराया है। इनके गूढ तत्त्वों का अनुशीलन करके, यदि हम अपने जीवन में इनकी उपयोगिता पर विचार करें तो हमारी सारी क्रियाओं का इनसे गहरा सम्बन्ध ज्ञात होगा।

सृष्टि का सृजन, पोषण एवं विनाश करनेवाली तीन महाशक्तियाँ - ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव के रूप मे जानी जाती हैं। मनुष्य का जीवन बाल्यावस्था, युवावस्था एवं प्रौढावस्था का संगम है। इसी प्रकार समूचा ब्रह्माण्ड, धरती, आकाश और पाताल, तीन स्तरों में विभाजित है। ज्ञान जीवन का आकाश है, भक्ति पाताल है और कर्म धरती। इन तीनों का सम्बन्ध शाश्वत है। ये तीनों पृथक होकर भी एक हैं। किसी एक के विच्छिन्न होने से संतुलन बिगडता है।

सनातन धर्म में ईश्वर प्राप्ति के तीन प्रमुख मार्ग बतलाये गये हैं - ज्ञान, भक्ति और कर्म। ये तीनों समानान्तर हैं, इनकी दिशा एक है। इन तीनों का समन्वय लक्ष्य प्राप्ति के लिये अनिवार्य है। जिस प्रकार शरीर की स्थिति, गति और क्रियाशीलता में रक्त, मांस और अस्थि तीनों की भूमिका समान महत्व की है, उसी प्रकार ज्ञान, भक्ति और कर्म की एकात्मता जीवन को सफल बनाने के लिये आवश्यक है।

जिन संत पुरुषों को संसार नमन करता है, उन्हें स्मरणीय बनाने में उनकी ईश्वर के प्रति आस्था के अतिरिक्त, उनके ज्ञान और कर्म की भी प्रमुख भूमिका रही है।

गोस्वामी तुलसीदास इसलिये अमर हुए कि उन्होंने दिन-रात राम का ध्यान करते हुए कठिन साधना से ज्ञान प्राप्त किया, उस ज्ञान का उपयोग अमर ग्रंथों के सृजन में किया। इस प्रकार भक्ति, ज्ञान और कर्म, तीनों के सहयोग से उन्हें अमरता और अक्षय कीर्ति मिली।

संत तुलसी की भांति अन्य महापुरुषों के जीवन में भी हमें भक्ति, ज्ञान और कर्म का अद्भुत संगम दिखाई देता है।

यह कैसी विडम्बना है कि सरस्वती के देश में अज्ञानता, निरक्षरता, दुर्गा के देश में अत्याचार, अराजकता, विघटन-लीला, बुद्ध और महावीर के देश में हिंसा, श्रीराम के देश में कुशासन और श्रीकृष्ण के देश में कर्मयोग के महान सिद्धान्तों का उपहास हम स्पष्ट देख रहे हैं। ऐसा क्यों?

लगता है, हमने जीवन के शाश्वत मूल्यों को ताक पर रख दिया है। हमने तत्त्वज्ञानियों की बताई हुई बातों की उपेक्षा की और अंत मे दिशाहीन हो गये। हमने इस सत्य को नही जाना कि सच्ची भक्ति है, अपने आराध्य के दिव्य गुणों को ग्रहण करना। सच्चा ज्ञान है, धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य, उचित-अनुचित को जानने पहचानने की दृष्टि प्राप्त करना तथा सच्चा कर्म है - जीवन, जगत् और मानव समाज के कल्याण को अपने समस्त कार्यो का लक्ष्य बनाना, स्वयं को ऊपर उठाना और दूसरों के हित के लिये जीवन समर्पित करना। इस सत्य की ओर से दृष्टि फेरने का कुपरिणाम हमारे सामने है। हम भक्ति और ज्ञान से शून्य होकर काम करें अथवा काम-काज छोडकर कहीं एकान्त में बैठकर ईश्वर का भजन करें अथवा ज्ञान से शून्य होकर भी स्वयं को नेतृत्व संचालन करने के योग्य मान बैठें, तीनों ही गलत है।

भक्ति, ज्ञान और कर्म के समन्वय का रूप स्पष्ट करने के लिये एक कथा प्रस्तुत है। एक स्थान पर मन्दिर बन रहा है। सैकडों श्रमिक कारीगर उसमें लगे थे। एक दिन एक राहगीर उधर से गुजरा और वही ठहरकर, मन्दिर का निर्माण कार्य देखने लगा। उसने एक श्रमिक से पूछा -
"यहाँ तुम क्या करते हो भाई? श्रमिक बोला- "देखते

नहीं पत्थर तोड रहा हूँ?''

राहगीर ने यही प्रश्न उसके साथी से पूछा। वह बोला- ''पेट पालने के लिये पत्थर तोड रहा हूँ।''

यही प्रश्न जब तीसरे श्रमिक से पूछा गया तो उसने कहा - ''मन्दिर का निर्माण कर रहा हूँ।''

एक ही काम करने वाले तीन व्यक्तियों ने एक प्रश्न के तीन अलग-अलग उत्तर दिये। पहले श्रमिक के उत्तर में सिर्फ कर्म का भाव था, दूसरे मे ज्ञान का और तीसरे में भक्ति, ज्ञान और कर्म तीनों का।

एक कथा इसी क्रम में और सुनिए। राजा अश्वघोष वैराग्य लेकर ईश्वर प्राप्ति की लालसा से देश-देशान्तर घूमते फिर रहे थे। उन्हें न तीर्थाटन से शान्ति मिली, न देव-दर्शन से। कथा प्रवचन सुनते ऊब चले, उससे भी कोई बात नहीं बनी। साधना से उनका मन उछट गया।

एक बार भ्रमण करते समय राजा की भेंट एक किसान से हुई, जो बडा प्रसन्न और संतुष्ट दिखाई दे रहा था, किसान से जब उसने उसकी प्रसन्नता का रहस्य जानना चाहा तो उसने उन्हें अपने साथ खेतों में ले जाकर काम में लगा दिया। दिन भर कडी मेहनत करने के बाद शाम को थके मांदे राजा ने किसान के साथ ही रुखा भोजन किया। उन्हें बडी तृप्ति और शान्ति मिली।

किसान बोला- ''राजन्! परिश्रम से रोटी कमाने और उसे मिल बाँटकर खाने से जो सुख, शान्ति और आत्मतुष्टि मिलती है, वह दुर्लभ है।'' अश्वघोष की आँखें खुल गई। उन्हें ऐसा लगा, जैसे उन्होंने ईश्वर को प्रत्यक्ष देख लिया है।

भगवान श्रीकृष्ण से नारद ने एक बार कौतूहलवश पूछा कि उनका अनन्य भक्त कौन है। श्रीकृष्ण ने उन्हें एक व्यक्ति का नाम बताया और उससे मिलने को कहा। नारद ने जाकर देखा कि वह एक चर्मकार है। दिन भर जूतों की मरम्मत करता है और एकाध बार ही भगवान का नाम लेता है। नारद को उसमें भक्त के लक्षण नहीं दिखाई दिये। वे लौट आये।तब श्रीकृष्ण ने उन्हें एक तेल भरा कटोरा दिया और उसे कैलाश पर भगवान शिव के पास पहुँचाने का आग्रह किया। नारद जब कटोरा पहुँचा कर आये तो श्रीकृष्ण उन्हें देखकर मुस्कुराये।

उन्होंने पूछा -''देवर्षि! यहाँ से कैलाश तक की यात्रा में आपने कितनी बार नारायण का नाम लिया? सच सच बताइयेगा।''

नारद बोले - ''आपने तेल का कटोरा क्या पकडा दिया, मेरा सारा ध्यान उसी पर लगा रहा। नारायण का नाम लेने लगता तो तेल छलक जाता और कैलाश पहुँचने पर कटोरे में एक बूंद भी न बचता।''

श्रीकृष्ण ने कहा- ''कर्म करते हुए कभी-कभी ईश्वर का स्मरण कर लेना, उसमें सच्ची आस्था रखना और ज्ञान की दृष्टि से अपने कर्तव्यों का ठीक-ठाक पालन करना ही सर्वश्रेष्ठ बनने के लिये आवश्यक है।''

सडक मरम्मत करनेवाला, पुल या इमारत बनाने वाला, कपडा बुनने या सिलाई करने वाला या अन्य कोई काम करने वाला यदि यह सोचे कि उसका कार्य देश या समाज की सेवा का रूप है तो उसे उस काम में अधिक आनन्द आयेगा। देश समाज की भक्ति उसमें काम की लगन दूनी कर देगी। उसकी योग्यता और ज्ञान से उसके काम में त्रुटि की सम्भावना नहीं रहेगी।

हमारे कर्ममय जीवन में ज्ञान, भक्ति और कर्म तीनों का सामंजस्य स्थापित होना चाहिये। तीनों की एकात्मकता ही सफलता और समस्त सिद्धियों का मूल है। शान्ति प्राप्ति का मार्ग सेवा ही है।

स्वामी विवेकानंद अक्सर अपने एक मित्र राजस्थान के नरेश श्री अजित सिंह से मिलने जाया करते थे। एक बार नरेश ने उनसे पूछा शान्ति प्राप्ति का सुगंम मार्ग कौन सा है। स्वामी विवेकानंद ने उत्तर दिया 'जिज्ञासु नरेश, यही प्रश्न लेकर एक बार एक व्यक्ति मेरे पास आया था। मैंने उससे कहा - तुम अपने मन की कोठरी का दरवाजा खोल दो और आस-पास के दीन दुखियों जरुरतमंदों, लाचार लोगों की सेवा में लग जाओ। अशिक्षितों को शिक्षा दो, तुम्हें जरुर शान्ति मिलेगी। स्वामीजी के इस मर्मभेदी कथन को राजस्थान नरेश ने अपने जीवन का सच मान लिया और सेवा के माध्यम से शान्ति प्राप्ति में लग गये।

आयुर्वै घृतम्

-वैद्य शिवप्रसाद चरखा, बीड.

घृत का अर्थ घी। घृत (घी) यह संज्ञा दही से छाछ और छाछ का मंथन करके बनता है माखन और माखन का घी। घी मतलब वनस्पति से बनाया हुआ घी नहीं। भारतीय जनमानस के नित्य आहार मे घी का उपयोग वेदकाल होता रहा है। घी जैसे मनुष्य को प्रिय है, वैसे देवताओंको भी प्रिय हैं। घी के आज्यम्, हवि, सर्पि: ऐसे भी नाम है। इसलिए पतले घी को आज्यम् और गाढे घी को घृत कहते है। देवताओंको आज्य प्रिय हैं, क्योंकि वह उनका प्रिय आहार है।

हमारे लिए हुए आहार से त्रिदोष (कफ, वात, पित्त) और सप्त धातु (रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र) इनकी उत्पत्ति होती है। शरीर को तेज देनेवाले ओज की, उसी प्रकार गोमाता के दूधपर संस्कार करने से घी की। घी के गुणोंका चिंतन करते हुए आयुर्वेद ने घी को ओजवर्धक कहा है। चरकाचार्य कहते हैं-

स्मृतिबुद्ध्याग्निशुक्रौज: कफमेदोविवर्धनम्
वात पित्तविषोन्माद शोषालक्ष्मीर्ज्वरापह्य्
सर्वस्नेहोत्तमं शीतं मधुरं रसपाकयो:
सहस्रवीर्यं विधिभिर्घृतं कर्म सहस्त्रकृत।

आयुर्वेद में घी का बहुत बडा महत्व है। आयुर्वेद ने घी को साक्षात् जीवनही कहा है। सभी स्नेह द्रव्यों मे घी सर्वश्रेष्ठ है। घी के नित्य सेवन से स्मरण शक्ति की वृद्धि होती है और उन्माद, राजयक्ष्मा, वातज और पित्तज रोग नष्ट होते हैं। विभिन्न द्रव्योंसे संस्कारित किये गए घी में सहस्राधि शक्ति आती है। घी औषधि द्रव्योंके गुणोंको अपने में संभालता है। जैसे ब्राह्मीघृत, अश्वगंधादिघृत ऐसे संस्कारित घी को आयुर्वेद में अनेक रोगोंके इलाज के लिए उपयोगमें लाया जाता है।

घृत अग्नि, मेधा, स्मृति, बल को बढाते हुए शरीरकी मार्दवता और कांति भी बढाता है। पुराना घी अधिक गुणकारी होता है त्वचारोग और नस्य के लिए विशेष उपयोग में लाया जाता है। इसमें देसी गायका घी श्रेष्ठ होता है। ऐसे अनेकविध गुणोंसे युक्त घी के बारेमें अनेकों ग़लतफैमियाँ हैं। घी के कारण हृदयविकार होता है, रक्तवाहिनी में रुकावट पैदा होतीहै, खून में चरबी का (कोलेस्ट्रॉल) प्रमाण बढता है, यकृत के कार्यमें रुकावटें पैदा होती हैं। ऐसी अनेको अशास्त्रीय गलतफैमियाँ समाज में प्रसारित की गयीं। जैसे जैसे विज्ञान प्रगतिशील होता जा रहा है वैसे वैसे यह बातें निरर्थक सिद्ध होती जा रही है। प्राणियों पर किये गए प्रयोग में यह बात सिद्ध हो चुकी है कि घृत सेवनसे चरबी बढती नहीं। हमारे देशमें बहुसंख्य लोक शाकाहारी हैं, प्रतिदिन २/३ चम्मच घी खानेसे हमें ५०/६० मि.ग्रॅ. कोलॅस्ट्रॉल मिलेगा लेकिन वह प्रतिदिन १ तोला खानेसे इसका प्रमाण २४९ मि.ग्रॅ. इतना है।

पाश्चिमात्य देशोंमें घी यह संकल्पना ही नहीं। इस कारण वहाँ इतना संशोधन नही हुआ। पर गत कुछ वर्षो में अमेरिका के एक विद्यापीठ ने अपने शोधनिबंधोंमें घी का महत्त्व किया है। घी शरीरके लिए एक उपयुक्त घटक है यह निष्कर्ष किया है। शाकाहारी व्यक्तिको ओमेगा ३ यह आवश्यक स्निग्ध पदार्थ घी से ही प्राप्त होता है। घी की तुलना मार्गारिन के साथ करना यह बात गलत है क्योंकि घी की स्निग्धता बहुतही अलग है।

प्राचीन समय में जिसे नास्तिकता का पुजारी कहा गया उन चार्वाक ने भी 'यावज्जीवेत् सुख जीवेन् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्। भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुत:॥' मतलब प्राण जबतक है तबतक सुखसे जीना, कर्जा करके घी पिना, एकबार देह नष्ट हुआ तो, वापिस प्राप्त होनेवाला नही। शरीर सौख्यके लिए घी कितना उपयोगी है मानो यही संदेश उन्होने दिया है। नास्तिक शिरोमणि होकर भी चार्वाकने ऋणं कृत्वा सुरां पिबेत ऐसा नही कहा। क्योंकि जीवन सुखपूर्वक व्यतीत करना हो तो भी उपयोगी है शराब नही इसकी जानकारी हमारे पूर्वजों को थी। ऐसे आयुष्य बल बुद्धि संपन्न करनेवाले घी को अपने आहार से सीमापार कर देना यह अज्ञान है।

तनाव से मुक्ति

संसार का प्रत्येक प्राणी किसी न किसी रोग से ग्रस्त है। इस विषय में देवर्षि नारद जी से बढ़कर कौन प्रमाण हो सकता है। एक बार नारदजी नाना लोकों में विचरण करते-करते इस मृत्युलोक में आये। इस भू-लोक को मृत्युलोक इसलिये कहा जाता है कि यहाँ सभी को मरना पड़ता है। यहाँ आकर नारद जी ने देखा:

तत्र दृष्ट्वा जनान् सर्वान् नानाक्लेशसमन्वितान्।
केनोपायेन चैतेषां दुःखनाशो भवेद् ध्रुवम्॥

अर्थात यहाँ सभी मनुष्य किसी न किसी क्लेश, परिताप या संताप से दुःखी हैं। यह बात तो सतयुग की रही होगी। आंज के युग में तो नाना क्लेशों में और वृद्धि हुई है। उन सब क्लेशों में सब से भयानक एक रोग है तनाव। यह तनाव मानसिक रोग कब होता है, किसको होता है, क्यों होता है? यह विचारणीय प्रश्न है।

"विश्व स्वास्थ्य संगठन रिपोर्ट के सम्पादक श्री रंगा स्वामी निवासमूर्ति के अनुसार भारत की एक फीसदी आबादी गम्भीर मानसिक बीमारी से ग्रस्त है।"

डब्ल्यू एच. ओ. (विश्व स्वास्थ्य संगठन) की रिपोर्ट के अनुसार देश के लगभग १० फीसदी लोग मानसिक तनाव से ग्रस्त या पीडित हैं। दुनियाँभर में मानसिक बीमारियों से ग्रस्त लोगों की संख्या लगभग ४५ करोड है। इतनी बड़ी संख्या में लोगों के मानसिक रूप से बीमार रहने से पड़ने वाला आर्थिक बोझ विश्वव्यापी कुल घरेलू उत्पाद का १२-१३ फीसदी तो आज है, जिसका सन् २०२० तक १५ फीसदी होने का अनुमान है।

आइए, तनिक इस मानसिक तनाव होने के कारणों पर विचार करें।

१. अधिकतर लोगों पर विशेषकर, बालकों पर उपेक्षा या अवहेलना से यह रोग होता है। जिन बच्चों की अभिभावक उपेक्षा करते हैं या उनकी हर समय अवहेलना की जाती है; माता-पिता, विमाता या अध्यापक बच्चों के कार्याधिक्य से, अपना औरस पुत्र न होने के कारण या कक्षा में अध्ययन मे पिछडने के कारण हर समय उपेक्षा या अवहेलना करते रहते हैं तो वे बालक बचपन से मानसिक तनाव या कुंठाओं से ग्रस्त हो जाते हैं। परिणामस्वरूप वे लज्जालू, कम बोलनेवाले, मौन रहनेवाले बनते जाते हैं और हर समय तनावग्रस्त रहने लगते हैं और उनका स्वभाव बन जाता है, क्रोधी, ढीठ और डरपोक। वे पढाई से भागने लगते हैं, पिछड़ते जाते हैं।

यही बात बड़े लोगों पर भी लागू होती है। आत्मीय जन, विशेषकर पति-पत्नी या माता-पिता या समाज जिसकी बार-बार अवहेलना, अनादर करता रहता है, वह व्यक्ति तनाव ग्रस्त हो जाता है। मान लो, कोई पति दब्बू प्रवृत्ति का हुआ और पत्नी से बार बार उपेक्षित या अनादृत होता रहा तो एक दिन वह मानसिक कुण्ठाओं से निश्चित रूप से ग्रस्त होगा। इसी प्रकार यदि पत्नी कमबोली, लज्जालु या भीरु प्रकृति की हुई और पति महोदय उसकी बार-बार अनदेखी करते रहे, उसे बार-बार झिड़कते रहे, वह दिन-प्रतिदिन तनाव ग्रस्त रहने लगेगी। यही बात पुत्र-पुत्री पर भी लागू होती हैं। माता-पिता जिन बच्चों को उत्साहित करने की बजाय झिडकते रहते हैं, वे बच्चे पढाई में तो पिछडते ही हैं, लज्जालु, भीरु और संकोची बनते चले जाते हैं। वे कांपने लगते हैं। पीले पडते लगते हैं।

समाज में भी जो व्यक्ति बहुधा अपमानित होते रहते हैं या जो कर्मचारी अपने अधिकारियों से बार-बार प्रताड़ना सहते रहते हैं, वे कुछ बिगाड़ने की स्थिति में तो होते नहीं, मानसिक रोगों से ग्रस्त होते चले जाते हैं। उन्हें चिन्ता रहने लगती है। श्री जयशंकर प्रसाद जी ने लिखा हैं-

"हे चिन्ता की पहली रेखा अरी विश्वपन की व्याली।"

१. सचमुच चिन्ता एक सर्पिणी है, जो मनुष्य को अनदेखे में ही डसती रहती है।

२. आर्थिक अभाव : आर्थिक अभाव भी तनाव का कारण बनता है। आय कम और परिवार की आवश्यकता अधिक होने से जब सन्तुलन बिगड़ जाता है, तब व्यक्ति निराशा से घिर जाता है।

३. असफलता : व्यापार में, परीक्षा में या व्यावहारिक जगत् में बार-बार असफलता भी व्यक्ति को तनाव ग्रस्त कर देती है। ऐसी स्थिति में किसी अनुभवी व्यक्ति से परामर्श

लेना या परीक्षा में उस विषय को ही छोड़ देना श्रेयस्कर होता है। व्यस्तता, कार्याधिक्य या अनेक प्रकार के असंगत, अनमेल कार्यों में रात दिन लगे रहनें से भी व्यक्ति में खीज उत्पन्न हो जाती है। रात में ही उठकर बैठ जाना, चिन्तित रहना, उबासियाँ लेना आदि उसके प्रारंभिक लक्षण हैं। असफलता के लक्षण चेहरे पर स्पष्ट दिखाई देते हैं। व्यक्ति अन्तर्मुखी होकर मौन रहने लगता है। चलते-चलते सोचते जाना तथा हाथों या उंगलियों के संकेत करते रहना उसकी आदत बन जाती है। वह निराशावादी बनता जाता है। बेचैनी और खीज से ग्रस्त होकर वह जुकाम से पीड़ित रहने लगता है। धूम्रपान करने लगता है, "चेन स्मोकर" हो जाता हैं। स्मृति उसका साथ छोड़ देती है। वह एल्कोहल जैसे नशीले पदार्थों का सेवन करने लगता है। समाज से भयभीत होकर एकान्त में पड़े रहना उसका स्वभाव बन जाता है। अत्याधिक मानसिक तनाव ग्रस्त होने से मनुष्य आत्महत्या तक कर डालता है। अब आगे बचा ही क्या? सार यह है कि यह तनाव जो उपेक्षा, अवहेलना, अपमान या बार-बार के अनादर से उत्पन्न होता है, जानलेवा साबित होता है।

तनाव से मुक्ति के उपाय

१. सत्संग : मानसिक तनाव से मुक्ति पाने का सर्वोत्तम साधन महापुरुषों का सत्संग है, जहाँ होनेवाली कथा में, मधुर संगीत में तथा वक्ता के अनुभूत दृष्टान्तों में श्रोता इतना रम जाता है कि वह अपनी सुध बुध खोकर अलौकिक आनन्द को प्राप्त करता है और उसमें एक नई आशा की किरण उदित हो जाती है। वह वक्ता द्वारा कथित कथा में अपने को भी एक पात्र मानकर संगीत के या कीर्तन के सुरों में तलीन होकर इतना मस्त हो जाता है कि उसके मन में किसी प्रकार का तनाव नहीं रहता। हरिकृपा जब होती है तो सत्संग प्राप्त होता है और समस्त मानसिक विकारों से, तनावों से छुटकारा मिलता है।

२. भगवन्नामकीर्तन : "संसार तापभय नाश बीज, गोविंद दामोदर माधवेति" वेद-वेत्ताओं का कथन है कि गोविंद, दामोदर और माधव के नाम मनुष्य की समस्त आधि-व्याधियों को समूल उन्मूलन करनेवाले भेषज हैं और संसार के आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक इन त्रिविध तापों का नाश करनेवाले बीज मन्त्र के समान हैं। कीर्तन में भी भगवन्नाम के उच्चारण में मन जब लीन हो जाता है तो सब प्रकार के तनावों से छुटकारा मिल जाता है और तनाव ग्रस्त व्यक्ति अदृष्य दुःखों को भूलकर आनन्दलोक में विचरण करने लगता है।

३. प्राणायाम : मानसिक शान्ति के लिए, मानवजीवन की रक्षा तथा आरोग्यप्राप्ति के लिए हमारे तपःपूत जो उपाय शास्त्रों में निर्दिष्ट किये हैं उनमें प्राणायाम साधना भी एक महत्त्वपूर्ण उपाय है। इसके करने से तथा निरन्तर अभ्यास से मस्तिष्क का स्नायुतन्त्र और तन मन सबल होता है। प्राण और आयाम इन दो शब्दों से प्राणायाम बनता है। यहाँ प्राण शब्द का अर्थ है प्राणवायु और आयाम का अर्थ है (निरोध) रोकना अर्थात् प्राणवायु को रोकना। "प्राणः स्वदेहजो वायुरायामस्तन्निरोधनम्"।

शरीर के लिए जिस प्रकार अन्न की उपयोगिता है, उसी प्रकार शरीर का रोग, चाहे वह कैसा भी क्यों न हो, उसके नाश के लिए औषधियों का विनियोग होता है। शरीर के बाहरी-भीतरी रोगों के समूलनाश के लिए प्राणायाम करना चाहिए। नासिका का दायें अंगूठे से दायां भाग रोककर साँस को रोकना तथा दूसरे नासिकारन्ध्र से धीरे-धीरे सांस छोडने की प्रक्रिया को प्राणायाम कहते हैं। यह यौगिक क्रिया है। इसे गुरु द्वारा ही सीखा जाना चाहिए। प्राणायाम से निराशा, चिन्ता तथा अज्ञात भय जो मानसिक तनाव की जड़े हैं, समूल नष्ट हो जाती है।

४. सन्त गुरु का सान्निध्य : सन्त का प्रभाव व्यक्ति और समाज पर परोक्ष और प्रत्यक्ष दोनों रुपों में होता है। सन्त का सामीप्य हमारे मन पर पूर्ण प्रभाव डालता है। प्रत्यक्ष रुप में हम उसके दर्शन करते हैं, वचनामृत सुनते हैं। वह सिद्धान्तों और तत्त्वों का विवेचन करता है। उसका चरित्र व्यक्ति के जीवन पर अमित प्रभाव छोड़ता है। वह व्यक्ति के मानसिक विकास के साथ-साथ उसका नैतिक उत्थान भी करता है। सन्त या गुरु के दर्शनमात्र से मानसिक विकार मिट जाते हैं। एक प्रकार की अलौकिक, विचित्र शान्ति मिलती है। सन्त या गुरु की सन्निधि जीवन में शान्ति, सन्तोष और मस्ती भर देती है। उसके भ्रम और सन्देह मिट जाते हैं, तनावों से मुक्ति मिलती है। मीराबाई को जब कहीं शांति नहीं मिली तो सन्तों की मण्डलीं में मिल गयी, जहां उसे जीवनदाता अमृत हरिनाम कीर्तन मिला और वह गा उठी:-

मैंने राम-रतन धन पायो।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु करि कृपा अपनायो।

यदि आप भी किसी तनाव से ग्रस्त हैं तो सन्तों की शरण में जाइए, सद्गुरु का सान्निध्य कीजिए। सन्त हर जीव को ईश्वर की शरण में जाने की प्रेरणा देंगे।

सन्तन के संग लाग रे तोहि राम मिलेंगे।

सन्त कृपा से राम की शरण में जाकर कैसी अशान्ति? कैसा तनाव?

५. सन्मित्रों का सहचार : वैसे तो मित्र बहुत मिलेंगे, जो किसी स्वार्थ या लालच के कारण आपकी भलाई में आपकी सेवा में खड़े मिलेंगे, परन्तु ऐसे मित्र स्वार्थ-सिद्धि के बाद छोडकर चले जाते हैं। सच्चे मित्र तो वे हैं जो निःस्वार्थ आपका भला चाहते हैं, आपके हर उत्थान में सहायक होते हैं। उनके साथ रहने से उनके आगे मन की ग्रन्थि खोलेने से वे कोई तो उपाय बतायेंगे ही। तब आपका बोझ हल्का हो जायेगा। आपका मन शान्त होगा। आपकी कुण्ठा मिट जाएगी। उनके साथ हँसकर, बोलकर रोकर आप सब कुछ उगल सकते हैं। अतः मित्रों के साथ रहें, उनके साथ काफी समय व्यतीत करें और हँसे। उनके साथ खाएँ, खेलें।

६. आशावादी लोगों से मिलना : तनाव होता ही निराशा में है अर्थात् निराशा से ही तनाव जन्म लेता है। अतः जो सज्जन आपको निरुत्साहित करें, नीचा दिखाने पर तुले हों, जिनकी सोच नकारात्मक हो, ऐसे लोगों से दूर रहना ही श्रेयस्कर होगा। जो उत्साही हों, उद्यमी हों, जिनका व्यस्त जीवन उन्नति पथ पर ले जानेवाला हो, ऐसे लोगों की सत्प्रेरणा से तनाव नहीं रहता। नई आशा, स्फूर्ति आती है।

७. प्राकृतिक स्थानों और तीर्थों का भ्रमण : प्रकृति हमारी जीवन संगिनी है। उसके सुरम्य स्थान, पर्वतीय दृश्य, नदी, झरने, जंगल जहां आँखों से साक्षात् प्रकृति का भगवान् का दर्शन करें, उन स्थानों के भ्रमण से निश्चित रुप से तनाव दूर होते हैं। बद्रीनाथ, केदारनाथ, हरिद्वार, गंगोत्री, यमनोत्री जैसे सुरम्य स्थानों और तीर्थों की पवित्र, शीतल, मन्द, सुगन्ध, वायु, गंगा-यमुना की निर्मल धाराएँ तन-मन का दुःख मिटा देती हैं। कन्याकुमारी से प्रभातकाल में सूर्योदय का मनमोहक दृश्य सागर के अंतस्थल को स्वर्णिम आभा युक्त कर देता है, जिसे देखकर इस जन्म के तो क्या जन्म-जन्मांतर के तनावों से मुक्ति मिल जाती है। उन स्थानों पर विचित्र आत्म-तुष्टि मिलती है।

८. बड़ों का आशीर्वाद : गुरुजनों, सन्तों, माता-पिता और वृद्धजनों के आशीर्वाद से भी मानसिक प्रसन्नता मिलती है और तनाव भी दूर होता है। अतएव महान पुरुषों तथा बड़ों को नमन करके आशीर्वाद लेना चाहिए। शास्त्रों में लिखा है :

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोऽपिसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम्।।

यहाँ बल से तात्पर्य मानसिक और आत्मिक बल से है, जिससे मानसिक शक्ति बढ़ती है तो तनाव घट जाता है।

९. सत्साहित्य का अध्ययन : ऐसी पुस्तकें जो वीर रस से ओत-प्रोत हों, उन्हें पढ़ें। वीरों की कहानियों या गाथाओं को पढ़कर भी उत्साह बढता है, नव रक्त का संचार होता है, स्फूर्ति आती है। भक्ति-काव्य भी मन को शान्त करता है।

अतएव प्रेरक साहित्य, पढ़ना चाहिए। राम-कथा चिंता को हरती है तो कृष्ण-कथा रसमग्न कर देती है।

१०. अन्य रुचिकर साधन : उक्त सुझावों के अतिरिक्त अन्य भी ऐसे कई साधन हैं, जिनसे मानसिक तनाव दूर होता है। जैसे नृत्य देखना, रासलीला, रामलीला या नाटक देखना। इनसे मन को प्रसन्नता मिलती है। कुश्ती, कबड्डी, फुटबॉल, वालीबॉल आदि अन्य खेल देखने से भी तनाव कम होता है।

❁❁❁

पू. आचार्य स्वामी श्री किशोर व्यास

आगामी कार्यक्रम

दिनांक	स्थान	कार्यक्रम
३०-१ ते ०५-२	रायपुर (छत्तीसगड)	भागवत प्रवचन
०९-२ ते १४-२	पुणे	श्री गणेश प्रतिष्ठा
१५-२ ते २१-२	कोटा (राजस्थान)	भागवत कथा
२५-२ ते ०३-३	रामेश्वरम् (तामिळनाडु)	भागवत कथा
०५-३ ते ०७-३	आलंदी (पुणे)	वार्षिकोत्सव
११-३ ते १७-३	वांबोरी (महाराष्ट्र)	भागवत कथा
१८-३ ते २०-३	औरंगाबाद (महाराष्ट्र)	व्याख्यानमाला
२२-३ ते ३०-३	दिल्ली (आदर्शनगर)	भागवत कथा
०१-४ ते ०३-४	चंडीगढ (पंजाब)	प्रवचन सत्संग
०४-४ ते १०-४	चंडीगढ (पंजाब)	भागवत कथा
१३-४ ते १९-४	पूर्णा (महाराष्ट्र)	भागवत कथा
२३-४ ते ०१-५	पुणे (सहकारनगर)	श्रीराम कथा
०४-५ ते १३-५	स्वर्गाश्रम (उत्तरांचल)	साधना शिविर
१५-५ ते २३-५	स्वर्गाश्रम (उत्तरांचल)	भागवत कथा

विशेष स्थिती में कार्यक्रम में परिवर्तन की संभावना रहती है।

संपर्क- 'धर्मश्री', मानसर अपार्टमेंटस्, पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे-४११ ०१६
दूरभाषः (०२०) २५६५२५८१, फॅक्स (०२०) २५६७२०६१
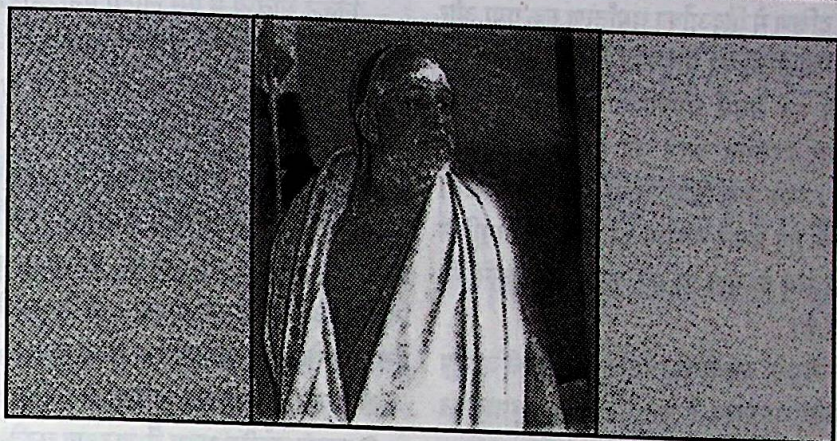
॥ श्री हरिः॥

सज्जनो, पढो, समझो और यह अल्प सेवा शीघ्र करो

कांची शंकराचार्य जी के निमित्त धर्मपर अन्याय के प्रसंग मे अपना कर्तव्य

कांची कामकोटि पीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य पू. स्वामी जयेन्द्र सरस्वतीजी महाराजको दीपावलि पर्वकी पूर्व रात्रिमे बंदी बनाकर तामिलनाडु सरकारने हिंदू धर्म ही नहीं, अपितु समस्त सज्जनोंपर भीषण प्रहार किया है। उनपर हत्याका मिथ्या आरोप लगाकर और प्रसार माध्यमों द्वारा उसे लज्जास्पद विकृत रुपमें प्रसारित कर मानो मीडियाको ही न्यायालय बना दिया। इस बहाने अनेक पुरानी घटनाओंको उभाडकर उनके साथ पू. स्वामीजी एवं मठका विकृत संबंध जोडनेकी पूरी कोशिश की गई। उन घटनाओंकी जाँच का बहाना बनाकर पुलिसने मठ और उसके आसपास दहशत का वातावरण निर्माण किया। इस जाँच में मठ की ओरसे पूरा सहयोग तो दिया गया ही, साथ-साथ देश के प्रमुख समाचार पत्रोमें (उदा. टाईम्स ऑफ इंडिया, दि. ७.१२.२००४) मठ ने विस्तारसे पूरा पृष्ठ निवेदन प्रकाशित कर अपनी ओरसे सत्य स्थिति देश के समक्ष प्रस्तुत की।

कांची मठ के द्वारा समाज के सभी स्तरों की सेवा के लिए अस्पताल, विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, उद्योग शिक्षा केंद्र, वृद्धाश्रम, अपंगाश्रम, ग्रामीण विकास केंद्र, अन्नछत्र, गौशाला, देवालय आदि कुल विविध ४०३ संस्थाओंका सफल संचालन करते हुए पू. स्वामींजीने समाजसेवा का नया कीर्तिमान स्थापित कर दिया। इसके

विशेष-ज्ञातव्य

संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल द्वारा आयोजित आगामी साधना शिविर वानप्रस्थ आश्रम, स्वर्गाश्रम (ऋषिकेश, उत्तरांचल) में दि. ६ मई से १३ मई २००५ तक निश्चित हो चुका है। इस विषय में व्यक्तिगत पत्राचार से सूचना नहीं भेजी जाएगी। इच्छुक साधकों से अनुरोध है कि शिविर आवेदन पत्र के लिए वे स्वयं ११ फरवरी २००५ तक गुरुकुल के कार्यालय में पत्र भेजे। जिनके पत्र इस अवधिमें कार्यालय में प्राप्त होंगे उन्हीं को आवेदन पत्र भेजे जाएंगे कृपया यह सूचना अन्य परिचित साधकों को भी दें। जय श्रीकृष्ण।

संयोजक
गीता साधना शिविर

परिणामस्वरूप दक्षिण मे हिंदुओंका धर्मांतरण रुक गया और विदेशी ईसाई मिशनरियों का यह कार्य पिछडने लगा।

ऐसे सक्षम एवं समर्थ धर्मपीठका अधिग्रहण करके उसका कारोबार हस्तगत करने की मुख्यमंत्रीकी हीन महत्वाकांक्षा है। उनके तथा विदेशी धनसे नियंत्रित सरकारी यंत्रणा तथा बिके हुए प्रसार माध्यम इन सभी के सामूहिक षड्यंत्र से हमारे धर्म के मूल पर क्रूर कुठाराघात करने की यह साजिश हुई है।

पू. स्वामीजी और कांची पीठ पर किये गये सभी आरोप झूटे निराधार और अन्याय्य है यह तो क्रमशः यथाकाल सिद्ध होगा ही। आज, अपने धर्म के सर्वोच्च सक्रिय सेवाभावी पीठ पर किये गये इस आसुरी आक्रमण से सारा देश हिल गया तथा भाविक समाज संतप्त हो गया है। सभी साधु-संत एवं अग्रणी नेताओंने इस कुकृत्यका धिःकार किया है। यह प्रकरण न्यायालयाधीन है। अपनी प्रतिक्रिया सभ्यतासे अभिव्यक्त करनेवाले हिंदू समाज के हर व्यक्ति के मन में क्षोभ और बेचैनी है। वह कुछ करना चाहता है, पर क्या किया जाय इसकी दिशा निश्चित नहीं कर पा रहा है। इस भावना का आदर करते हुए उसे क्रियात्मक रूप देने की सरल योजना यह है -

कृपया आप 'कांची कामकोटि पीठ' के नामसे केवल रु. १०० अथवा रु. ५० अथवा कम से कम रु. २० तो भी मनी ऑर्डरसे भेजें। आपकी इच्छा हो तो अधिक भी भेज सकते है किंतु कुछ न कुछ दक्षिणा अवश्य भेजें। अधिक राशि भेजनी हो तो चेक अथवा ड्राफ्ट भी भेज सकते हैं। मनी ऑर्डर फॉर्म में संदेश के स्थानपर 'पू. स्वामीजी और कांची शंकराचार्य पीठ में हमारी श्रद्धा हर स्थिति में अटूट है' ऐसा कुछ संदेश भी अपनी इच्छानुसार लिखें।

निकट भविष्य में ऐसे लाखों मनी ऑर्डर्स भेजे जानेपर मठ के भक्तोंका और सेवकोंका आत्मबल बढेगा। जनता मठ के साथ है यह भावना उन्हें संघर्ष के क्षणों में सामर्थ्य प्रदान करेगी। संपूर्ण समाज मठके साथ है यह तथ्य प्रसारमाध्यमों के ध्यानमें आएगा। और इस संकट की बेलामें की हुई गुरुसेवाका सात्विक समाधान तथा पुण्य आपको प्राप्त होगा। आप के बालकों को कर्तव्य पालन का संस्कार मिलेगा। आपका अल्प योगदान भी हिंदुत्व के अस्तित्व के लिए बहुमोल एवं ऐतिहासिक सिद्ध होगा।

- कृपया इस पत्र का अधिक से अधिक प्रसार करें।
- इसका प्रांतीय भाषा में अनुवाद करके वितरित करें।
- अपने परिचित एवं संबंधित लोगोंको इस सेवा के लिये प्रेरणा दें।
- सभी पूज्य धर्माचार्य, मंदिर-देवस्थान, गणेशोत्सव आदि मंडल, महिला मंडल, धार्मिक एवं सामाजिक संस्था-संगठन तथा धर्म प्रेमी, राष्ट्रनिष्ठ जागृत नागरिकों को से प्रार्थना है कि इस प्रकार का पत्रक चाहे तो अपने-अपने नाम से प्रकाशित एवं वितरित करके इस धर्म सेवा में सहयोग दें।
- इस पत्रक को स्थानीय दैनिक, साप्ताहिक, मासिक समाचार पत्र-पत्रिकाओं में मुद्रित करके इस का प्रचार करने में योगदान दें।

भगवत्कृपासे धर्मसेवा अभियान का यह जगन्नाथजी का रथ हम सभी के प्रयास से निरंतर आगे बढेगा यह विश्वास है। इसमें आपके सहयोग के लिये विनम्र प्रार्थना है।

जय श्रीकृष्ण !

आचार्य किशोर व्यास

श्री शंकराचार्य सेवा समिति-मनीऑर्डर भेजने का पता-

मॅनेजर,
कांची कामकोटि पीठ,
1, सलाई स्ट्रीट,
कांचीपुरम-631502 (तामिळनाडु)

The Manager,
Shri Kanchi Kamakoti Peetham,
1, Salai Street,
Kanchipuram 631502 (Tamilnadu)
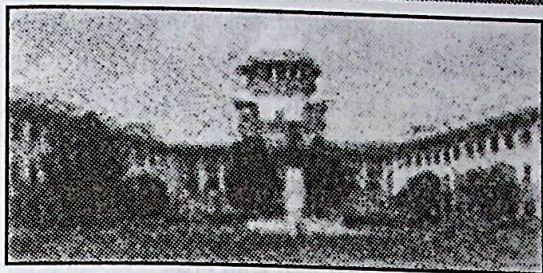
न्यायालय ने कहा...

● प.पू. शंकराचार्य स्वा. जयेन्द्रसरस्वती महाराजको जमानत पर मुक्त करते समय सर्वोच्च न्यायालयने कहाः

-मृतक (शंकररामन) कांची मठ की सेवा में नहीं थे अपितु अन्य एक धर्मस्थान के व्यवस्थापक थे जिसका कांची मठ से कोई संबंध नहीं है। उनका स्वयं का कांची मठ से १९९८ से कोई संबंध नहीं था।

❀❀❀

● -ऐसा एक भी सबूत नहीं है जो यह दिखाता हो कि मृतक द्वारा लगाए गए आरोपों के कारण स्वामीजीने कभी उनके प्रति घृणा प्रकट की हो। ... अतः यह मानना तर्कसंगत नहीं लगता कि उन्होंने तीन वर्षोंके पश्चात् उसे यकायक मार डालने का षडयन्त्र रचा।

❀❀❀

● हत्यारों को देनेके लिए धन का प्रबंध किस तरह किया गया इस विषयमें प्रस्तुत किये गये तर्क निराधार हैं।

❀❀❀

● यह लगभग असंभव लगता है कि आरोपी (स्वामीजी) ने अपरिचित एवं मठ से असंबद्ध लोगोंके समक्ष हत्या के विषयमें कुछ कहा हो।

❀❀❀

१९९८ में आंध्रकी एक मिलमें दो महिलाओंकी बलात्कार के पश्चात् हत्या की गयी थी। दो माहने पूर्व इस विषयमें वृत्तपत्रों में छपे वृत्तोंके आधारपर हैदराबाद उच्च न्यायालय में एक याचिका दाखिल की गयी। इस याचिकामें पू. स्वामीजीका नामोल्लेख सूचकता से किया गया। न्यायालयद्वारा इस संबंध में प्रश्न उपस्थित करने पर आवेदकों ने याचिका वापस लेना चाहा। इस याचिका को अमान्य करते हुए।

- हैदराबाद उच्च न्यायालयने कहा :

● -अतिविशिष्ट संस्थाएं एवं मान्यवर व्यक्तिओंको जिस तरह कलंकित करने का प्रयास हो रहा है वह चिंताजनक है।

❀❀❀

● - स्वतंत्र भारत में (कांची मठ जैसी) एक सुविख्यात संस्था जो २५०० से भी अधिक वर्षोंसे विदेशी आक्रमण एवं सामाजिक परिवर्तनों को सहते हुए खडी है उसे संगठित रुप में, नियोजनबद्ध रीतिसे बदनाम करने के प्रयास हो रहे हैं यह वास्तवमें व्यथित करता है।

ऐसा दिखता है कि केवल कुछ व्यक्ति ही नहीं अपितु राज्यशासन एवं वृत्तपत्र संस्थाएं भी पीठ को कलंकित कर उसे नीचा दिखाने पर तुले हुए हैं।

❀❀❀

● -दूसरी तरफ मानवाधिकार, मानवि एवं संस्थाओंकी प्रतिष्ठा के समर्थक चुप्पी साधे हुए हैं।

❀❀❀

● - हर देशमें कुछ संस्थाएं ऐसी होती हैं जो लोगोंके विवेक एवं सम्मान की रक्षक होती हैं। शासक कोई भी हो, इन संस्थाओं को आदरसे, पूज्यभावसे देखा जाता हैं।

ऐसी संस्थाओं में कभी कुछ न्यूज निर्माण भी हो तो समाजके धुरीण व्यक्ति उस संस्था की हानि न हो इस प्रकार उसे निपट लेते हैं। केवल असमंजस एवं लघुदृष्टिवाले व्यक्ति ही ऐसी स्थितिओंका लाभ उठाकर संस्था पर टूट पडते हैं। उनकी यह करनी केवल उनका गिरा हुआ नैतिक स्तर दिखाती है। लंबे समय में ऐसी करतूतोंसे समाजही विनाशकी ओर बढता है।

❀❀❀

● -इन दिनों प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्ति अथवा संस्थाओं के विरुद्ध विषैला प्रचार यह आम बात है। .... कुछ चातुर्य के आधारपर जो सत्य को असत्य अथवा असत्य को सत्य सिद्ध होनेका आभास निर्माण किया जा सकता है।

❀❀❀

● -स्वामी श्री जयेन्द्र सरस्वती पर जो अप्रतिष्ठा एवं मानहानि थोपी गयी है वह इतनी बडी है की उसकी (वर्तमान में) कोई तुलना नहीं है।

❀❀❀

● -उनके साथ वैसा व्यवहार किया गया जैसा द्रौपदी के साथ कौरवोंकी राजसभामें। जब कि कुछ व्यक्ति उसकी मानहानिमें आनंद उठा रहे थे, दूसरे जो उसकी रक्षा कर सकते थे कुछ ना कुछ बहाना बनाते हुए चुप्पी साधे बैठे रहे। आगे क्या हुआ। जब दोनों प्रकारके लोगोंपर इसी तरह की आपत्तियाँ आयी, वे अपना बचने का अधिकार खो बैठे।

❀❀❀

● -देशके निर्माण एवं सर्वांगीण विकासमें आध्यात्मिक संस्थाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

.... उन्हें ध्वस्त करनेका प्रयास मात्र समाज के नैतिक अध:पतन का निर्देशक है।

....इस प्रकारे सुप्रतिष्ठित संस्थाओं पर निराधार तथ्योंके सहारे कीचड उछालना समाजके लिए आत्महत्या ही सिद्ध होगा।

❀❀❀

● -इन दिनों एक शब्दप्रयोग काफी प्रचलित है - 'कानून अपने रास्तेसे चलता रहेगा। (Law will take its own course) ध्यानमें रहे कि यह कोई संपूर्ण तथा निरपेक्ष सत्य नहीं है। यह तभी सत्य होगा जब न्याय संस्थासे संबद्ध सभी पक्ष अपनी भूमिका प्रामाणिकतासे निभाएंगे।

❀❀❀

● -इस देशकी न्यायव्यवस्था इतनी लचीली हो गयी है किं निराधार आरोपोंके बलपर निरपराधियोंको कारागृह में महीनों जकडा जा सकता है जबकि जघन्य अपराधी खुले आम घूम सकते हैं।

❀❀❀

● -वृत्तपत्र एवं इलैक्ट्रॉनिक माध्यमोंकी सक्रिय भूमिका ही नहीं अपितु आक्रामक भूमिकाके कारण न्यायालयोंके स्वातंत्र्य का संकोच हुआ है। भाषण एवं अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य, जो पत्रकारिता के मूलाधार हैं, इनका दुरुपयोग हो रहा है।

❀❀❀

शंकराचार्य की मुक्ति के लिए दलितों की प्रार्थना

हिंदू विरोधी संघटनाओं ने हिंदू समाज का विभाजन करने हेतु कांची शंकराचार्य की प्रतिभा को दलित विरोधी बनाया है। परंतु सत्य कुछ और ही है।

नागापट्टनम् जिले के चार कसबों के दलितों को शंकराचार्य की गिरफ्तारी से बहुत बडा सदमा पहुँचा है। और वह उनकी रिहाई के लिए प्रार्थना कर रहे हैं। पोरायर के रास्ते में बसे करीब ५० दलित लोगों के घर हैं जिन्हें 'कत्तुनायकन्' कहा जाता है। यह सभी पिछडी जनजाति के और चमार जाति के लोग हैं।

१९९२ में उन्हें अम्मा (देवी) का उनके इलाके में मंदिर बनाने के लिए शंकराचार्य को सहायता के लिए लिखा। उनकी सहायता से मंदिर का निर्माण हुआ। इतना ही नहीं उन्होंने काली माँ की मूर्ति को मंदिर के लिए दान किया।

कत्तुनायकन् के प्रमुख नरेशन् ने बडे ही भावुकता से कहा, शंकराचार्य जी ने खुद हमें देवी की पूजा का सही मार्ग बताया। जब कुछ स्थानिक लोग हमें अछुत मानते थे। मैं जब मठ में कुंभाभिषेक के लिए गया तब स्वामी जी ने १०,००० रु. की राशि तुरंत मंजूर की। आज उनके साथ जो हो रहा है। उसे हमें सचमुच बहुत दुःख हो रहा है और हम उनकी रिहाई के लिए प्रार्थना कर रहे हैं। पास के भुरात्तेर गांव के २०० दलित घरों के लोगों ने भी यही कहानी दोहराई। शंकराचार्य जी ने हमें भी मंदिर बनाने के लिए मदद की और देवी की मूर्ति भेंट दी। पोरायर के निकटवर्ती गांव राजीवपुरम् के करीब ५० दलित कुटुंबियों ने भी इसी प्रकार से अपनी भावना प्रकट की है। 'सलाई काली माँ मंदिर' अब उनके नजदीक बन रहा है। इस मंदिर के निर्माण के लिए शंकराचार्य ने धनराशि दान की है। और देवी माँ की मूर्ति देने का भी वादा किया है। राजीवपुरम् के स्थानिक थंगय्याह ने भी कहा कि शंकराचार्य बहुत दयावान है और पिछले साल जून मे उन्होने मंदिर को स्वयं भेट दी थी। उनकी गिरफ्तारी से राजीवपुरम् के सभी लोगों को काफी सदमा पहुँचा है। और उसने आगे कहा कि "स्वामीजी की तुरंत रिहाई होनी चाहिए"। नगाई जिले के थिरुथुरशुंडी के इरुलनिक्की गाँव, जहाँ शंकराचार्य जी का जनम् हुआ था वहाँ के १०५ दलित कुटुंबीय दुखित हुए।

अरुमुगम के एक देहाती ने कहा कि 'संचार माध्यम के लोग स्वामी जी के ख़िलाफ तरह-तरह की बाते लिख रहे हैं। इस गुनाह मे उनका हाथ होना असंभव है। और वे जल्द ही छूट जायेंगे।' 'दि चंद्रशेखर सरल डेव्हलपमेंट ट्रस्ट' ने बहुत सारे विकास कार्यक्रम सफलतापूर्वक पूरे किए है। दलितों के लिए ट्रस्ट ४० घरों का निर्माण किया है। ट्रस्ट ने गाँव में सभी सुविधाओं से युक्त आरोग्य केंद्र का भी निर्माण किया है।

साभार : हिंदू व्हाइस, मुंबई

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के लिये दानदाताओं की सूची

रु. ५००० और अधिक

दि. १६/९/२००४ से ३१/१२/२००४ तक

नाव	स्थान	दानराशि
श्रीमती लक्ष्मीबाई गं. झंवर	जालना	५०००/-
श्रीमती प्रेमलता पु. लोहिया	जालना	५०००/-
श्रीमती सावित्रीबाई श्री. भुतडा	परभणी	५०००/-
श्री. मुरलीधरजी प्रे. भांगडिया	परभणी	५०००/-
कु. कीर्ति सि. मंत्री	परभणी	५०००/-
श्री. अरुणकुमारजी रा. सोमाणी	लातूर	५००१/-
श्री. जयप्रकाशजी बा. खटोड	लातुर	७१००/-
श्री. मदनलालजी वि. मालु	लातूर	५००१/-
श्री. रामबिलासजी धी. पलोड	लातूर	५०००/-
सौ. रामकँवरबाई श्री. कासट	लातूर	५०००/-
श्री. सीतारामजी म. बाहेती	वाशिम	५०००/-
श्री. कांतीलालजी श्या. मालाणी	सेलु	५०००/-
श्री. हनुमानदासजी सा. अग्रवाल	जिंतुर	५०००/-
श्रीमती सरलादेवी राठी	पाली	५००१/-
श्री. वंशीलालजी भुतडा	पाली	५००१/-
श्री. मुरलीधरजी प्रे. झंवर	सातारा	१०००००/-
सौ. मंदाकिनी अ. खांबेटे विश्वस्त निधी	जळगाव	५०००/-
श्री. मांगेरामजी गर्ग	दिल्ली	७१००/-
श्रीमती शैलजाताई म. भिडे	अहमदनगर	१०००००/-
श्री. रवी पी. सिक्का	कॅनडा	५१००/-
श्री. पंडित ना. भामरे	जळगाव	५०००/-
श्रीमती प्रभादेवी अरोरा	पटना	५१००/-
श्री. श्रीनिवासजी गो. भुतडा	सोलापुर	७१००/-
डॉ. सत्यशाम श्री. तोष्णीवाल	सोलापुर	७१००/-
श्री. अरविंद स. मोकाशी	सोलापुर	७१००/-
श्री. घनश्यामदास तु. धूत	सोलापुर	७१००/-
डॉ. बी. शिवशंकर	सोलापुर	७१००/-
सौ. नीता करवा	सोलापूर	५०००/-
श्री. राजगोपालजी मु. मिणियार	सोलापुर	७१००/-
श्री. विठ्ठल मोहनलाल लाहोटी	सोलापुर	७१००/-
श्री. गोविंदप्रसादजी शं. तिवाडी	सोलापुर	७१००/-

नाव	स्थान	दानराशि
श्री. दुर्गाप्रसादजी मु. मिणियार	सोलापुर	७१००/-
श्री. प्रदीप रामचंद्र कुलकर्णी	सोलापुर	७१००/-
श्री. सुरेश जनार्दन बिटला	सोलापुर	७१००/-
श्री. कल्याणमल खंडेलवाल	सोलापुर	७१००/-
श्री. चंद्रकांत मो. खंडेलवाल	सोलापुर	५०००/-
श्री. चंदुलालजी इं. सिंगी	सोलापुर	५०००/-
प्रा. राजशेखर रामसिंग येळीकर	सोलापुर	५०००/-
डॉ. संध्या मसाजी नाईकनवरे	सोलापुर	५०००/-
समर्थ सहकारी बॅंक लि.	सोलापुर	१००००/-
श्री. रामनिवास जमनालाल जाजू	सोलापुर	७१००/-
श्री व सौ. जे.जे. कुलकर्णी	सोलापुर	५००१/-
सौ. सुरजकुंवर ह. बियाणी	कोल्हापूर	५१००/-
सौ. सुनंदा श्रीपाद शिंत्रे	सोलापुर	५००१/-
श्री. ओमप्रकाश ज. लड्ढ	सोलापुर	५०००/-
श्री. विष्णुदासजी भुतडा	लातूर	११०००/-
स्व. श्री. दगडूलाल वि. करवा चॅरिटेबल फाऊंडेशन	लातूर	३१०००/-
डॉ. किशनलाल बाहेती	बीकानेर	५०००/-
श्री. शिवदत्तजी भट (दाधीच)	उदयपूर	५०००/-
श्री. जोरहाट दाधीच परीसद	आसाम	५१००/-
श्री. शिवभगवानजी डोलिया	सीकर	५१००/-
श्री. श्रीनिवासजी व्यास	ब्यावर	५१००/-
श्री. अरुणकुमारजी गोठेचा	गुवाहाटी	५१००/-
श्री. आचार्य पं.न. दाधीच	चुरु	५१००/-
श्री. सत्यनारायणजी पल्लोड	चुरु	५१००/-
श्री. माधवलाल द. ओझा	गडचिरोली	५१००/-
श्री. रामकुमारजी	बेंगलोर	२१०००/-
श्री. चंद्रकुमारजी कालडा	कोलकाता	५०००/-
श्री. श्यामसुंदरजी केरसीया	हैद्राबाद	५०००/-
श्री. चंद्रपालजी गुप्ता	इंदौर	५०००/-
श्री. वीणाताई ओक	पुणे	२५५०१/-

श्री. सचिन निशिकांत बोबडे	पुणे	२५०००/-
श्री. जगदीशजी अग्रवाल	पुणे	५००००/-
श्री. करशनदास शि. मिस्त्री	जोगेश्वरी	५०००/-
श्री. लक्ष्मीचंदजी सराफ	मुंबई	५०००/-
श्री. जितेंद्रजी शं. शुक्ला	अंधेरी	५०००/-
श्रीमती राधादेवी हरिश्चंद्र गुप्ता	अंधेरी	५०००/-
श्रीमती गीतादेवी मुंदडा	मुंबई	५०००/-
श्री. विष्णुप्रसादजी करवा	अंधेरी	५०००/-
श्री. लक्ष्मी ट्रे. कॉ. एक्सपोर्ट	मुंबई	५०००/-
श्री. पूसारामजी भ. सुथार	अंधेरी	५०००/-
सौ. रिटा जितेंद्रजी शुक्ला	अंधेरी	५०००/-
श्रीमती शशी अग्रवाल	जोगेश्वरी	५०००/-
सँटो इंजि. कंपनी प्रा.लि.	अंधेरी	५०००/-
श्री. जानकीप्रसादजी प्र. माहेश्वरी	अंधेरी	५१००/-
श्रीमती चंद्रकला गुप्ता	नवी मुंबई	५१००/-
श्रीमती आशाराणी रा. गुप्ता	मुंबई	५०००/-
श्री. द्वारकादासजी भंडारी	अंधेरी	५००१/-
श्रीमती ज्योती राजुल करवा	अंधेरी	५१००/-
श्री. मुरली नारायणजी काबरा	ओशिवरा	५००१/-
श्रीमती परमेश्वरीदेवी सु. अग्रवाल	ओशिवरा	५००१/-
अक्षय, शिवांगी, अंकुर पांडे	अंधेरी	१००००/-
श्री. अशोक, व्यंकटेश कुलकर्णी	मुंबई	५००२/-
श्री. नारायणजी चांडक	अंधेरी	५०००/-
श्री. भँवरलालजी सारडा	मुंबई	५०००/-
श्रीरामभक्त	मुंबई	५१००/-
श्री. किशनजी सिंहल	मुंबई	५००१/-
श्री. विश्वनाथजी चौधरी	मुंबई	५१००/-
श्री. श्रीलेखा एन. गट्टाणी	मुंबई	५००१/-
श्री. दौलतरामजी इनानी	बोरिवली	११०००/-
श्री. गोपालजी अग्रवाल	वसई (पू.)	५०००/-
डॉ. श्यामजी अग्रवाल	मुंबई	२१०००/-
श्रीमती रुमा गोव्हा	मालाड	५०००/-
श्रीमती शशीदेवी झंवर	कोलकाता	१००००/-
श्री.जयनारायणजी एस. करवा	जालना	१५०००/-
श्री. प्रकाशचंद्रजी जयस्वाल	जालना	५०००/-
श्री. सुधाकरराव बबनराव डिक्कर	जालना	५०००/-
श्री. उषादेवी श्रीनिवासजी दायमा	जालना	५००१/-
श्रीमती गीतादेवी मंत्री	जालना	५००१/-
श्रीमती सदाकँवरबाई मुंदडा	जालना	५०००/-
श्री. विजयजी केला	नाशिक	५०११/-
श्री. प्रदीपजी रानिवासजी मंत्री	जालना	५००१/-
सौ. सुनितातार्ई शं. कुलकर्णी	जालना	५०००/-
सौ. कमलादेवी फु. भक्कड	जालना	५०००/-
श्री. भगवानदास एस. लाहोटी	जालना	५००१/-
श्री. भागीरथीबाई बांगड	जालना	५०००/-
श्री. रामेश्वरजी जे. इंदाण	जालना	५००१/-
श्रीमती विद्याबाई रा. अग्रवाल	जालना	५००१/-
सौ. कमलाबाई रामनिवासजी मंत्री	जालना	५००१/-
सौ. राजश्रीदेवी शरदजी जैसवाल	जालना	५०११/-
चि. ऋषिकेश अ. चेचाणी	जालना	५१००/-
चि. वेदांत नि. चेचाणी	जालना	५१००/-
श्री. राजेंद्रजी के. जेथलिया	जालना	१११००/-
श्री. नितीनकुमार तोतला	जालना	५०००/-
श्री. शंकरलालजी शहा	जालना	५१११/-
सौ. विद्यादेवी गोयल	जालना	५०५०/-
श्री. पंकज ब्रिजमोहनजी लड्ढा	जालना	५०००/-
श्री. मुंजाभाऊ गंगाराम पांचाळ	जिंतुर	५०११/-
श्री. जेठमलजी ल. तापडिया	सेडम	११०००/-
श्री. विष्णुदासजी गो. सोनी	हैद्राबाद	५१००/-
सौ. भारतबाई मारुतीराव कोटगिरे	अहमदपुर	५००१/-
मे. तिरुपुर सर सेठीलाल कॉटन मिल्स लिमिटेड	तिरुपुर	५०००/-
श्रीकृष्ण यार्न टेक्स सिंडीकेट	तिरुपुर	१५०००/-
श्रीमती सर्वेश्वरीदेवी सक्सेना	भोपाल	५१००/-
श्रीमती मानसी देवीदास पावसे	बोरीवली	७१००/-
श्री. रतनलालजी श्री. अध्यापक	सीकर	१००००/-
श्री. विनोदजी कालानी	जयपुर	११०००/-
श्री. भगवानदास तोष्णीवाल	जयपुर	५१००/-
श्री. हंसराजजी अग्रवाल	जयपुर (राजस्थान)	११००१/-
श्रीमती सीमा अग्रवाल	जयपुर	५०००/-
श्री. प्रमोदजी कोटावाला	जयपुर	५०००/-
श्री. अशोकजी अग्रवाल	ओरीसा	१५५००/-
श्री. श्यामसुंदरजी अग्रवाल	जोधपुर	११०००/-
श्री. वसंतराव दत्तोपंत चौधरी	सेलू	५०००/-

❀❀❀

महामहिम उपराष्ट्रपति श्री. भैरोसिंह शेखावत जी आचार्य श्री से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए।

राजस्थानकी मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे शिंदे आचार्य श्री से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए।
साथ में श्री. रामदासजी अग्रवाल

यह पत्र स्वत्वाधिकारधारक महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के लिए मुद्रक और प्रकाशक श्री राजकुमार बन्सीलाल अग्रवाल ने मंदार ट्रेडर्स, ७५५ कसबा पेठ, पुणे - ४११०११ में मुद्रित कराकर महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान, ३ मानसर अपार्टमेंटस्, पुणे विद्यापीठ मार्ग पुणे ४११०१६ महाराष्ट्र (भारत) से प्रकाशित किया। संपादक : डॉ. प्रकाश पाडुरंग सोमण
महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के सदस्यों के अतिरिक्त प्रसाद - मूल्य प्रति अंक रू. ५/- मात्र